वर्ष 28, अंक 08 अगस्त-2026 ₹ 3/-

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी।

SHABARI SALEM

ज्ञानात् परं सुखम्

शबरी

Shabari Siksha Samachar शिक्षा समाचार

तमिलनाडु के सेलम जिले से पिछले 28 वर्षों से बिना किसी अनुदान के निरंतर प्रकाशित होनेवाली,
एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका है।

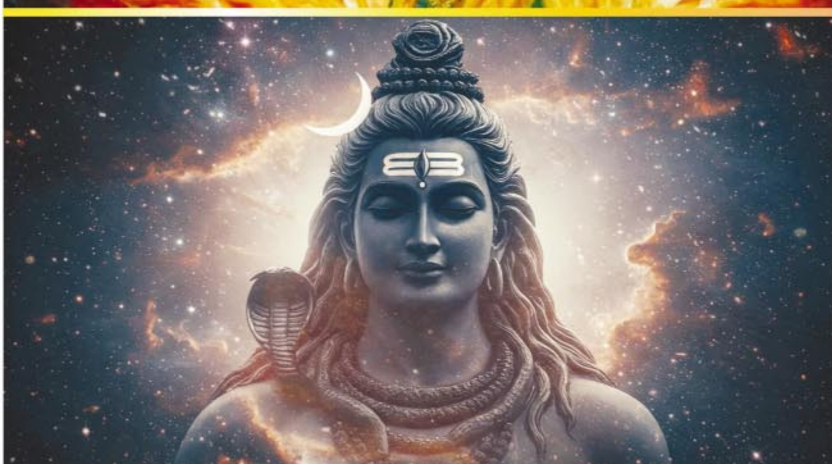

अभिषेक करते अनुदिन, पानी से पुगल नित ।
सोने का सिक्का पाए, शिव से हर दिन एक ।।

शबरी परिवार से एक और भेंट

अक्षया हिन्दी पाठ्यपुस्तक

बाल कक्षाओं से पाँचवीं कक्षा तक के छात्रों के लिए

आज ही खरीदें...
Get your copies now...

- ❖ मन भावन शैली
- ❖ सामाजिक मूल्यों पर आधारित
- ❖ सरल और ज्ञानवर्धक अभ्यास
- ❖ भाषा कौशल पर आधारित
- ❖ सृजन तथा चिंतना शक्तिवर्धक
- ❖ सरल तथा शुद्ध भाषा
- ❖ छात्रों में रुचि उत्पादक
- ❖ अभिभावक का प्रिय पुस्तक
- ❖ श्रेष्ठ अध्यापक का मन मोह पुस्तक

Shabari Book House proudly presents

Akshaya Hindi Paatyapusthak

a new series of Hindi third language books that inspire the learner

- ✦ Captivating storytelling
- ✦ Value-driven lessons
- ✦ Engaging book exercises
- ✦ Enhanced language proficiency
- ✦ Boosts creativity & critical thinking
- ✦ Lucid, effective language
- ✦ Sparks student curiosity
- ✦ Parent-friendly content
- ✦ The best teachers' Choice

Price

LKG	₹ 90/-
UKG	₹ 100/-
Std-1	₹ 150/-
Std-2	₹ 150/-
Std-3	₹ 150/-
Std-4	₹ 150/-
Std-5	₹ 150/-

SHABARI BOOK HOUSE

"Shabari Palace"
194, Second Agraharam,
Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414,
98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/

पढ़ो मन भरके

शबरी
शिक्षा समाचार

वर्ष 28, अंक 08 | मूल्य ₹ 3/- | अगस्त - 2026

प्रधान संपादक
एम. वेंकटेश्वरन
संयुक्त संपादक
आर. जयकरन
सहायक संपादक
आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय
Shabari Siksha Samachar
R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक
Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES
Whatsapp : 9443165414
Office Phone : 9842765414
Office Phone : 9443365414

VANI VIKAS NUMBER
88704-55599 Office Hrs : 10 AM - 5 PM
0427-4265414, 4552100

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
मन कैसे टूटता है ? 7
कंधे पर 8
बाल साहित्य लेखन की महत्ती ... 10
बारी का इंतज़ार 12
सब से ऊपर राष्ट्र - धर्म है 13
बुढ़ापे की लाठी 14
चापलूसों का घेरा 15
अपना खयाल रखिए 16
सम्मान 16
पर्यावरण-संरक्षण 17
छोड़ी 18
फेक न्यूज़ और प्रोपेगैंडा 20
बरसात 21
पैसे की महिमा 22
बाईक पर बंधी इंसानियत...! 23
जरा आगे बढ़कर तो देखो 24
हमने जिसको अपना समझा 25
मन का मृग 25
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
ग़ज़ल 30
लघु रचनाएँ 30
कुंडलियाँ छंद रचना 31
यादों की अमराई 31
देश हमारा 32
मेरा उपहार 32
यत्र तत्र सर्वत्र 33
मोर 33
प्यारा तिरंगा 34
हिन्दी का छूट रहा साथ 34
हर दिन एक कविता 35
आत्मविश्वास 35
महँगाई पर मौन क्यों ? 36
बरखा रानी ! 36
अक्षर की महिमा 37
रूप पशुपतिनाथ के 38
दर्पण 38
ऐसा हो हमारा जीवन 39
उम्र तो बढ़ती है... 39
उम्मीद का उगे सूरज 40
ग़ज़ल 40
पाठकों के पत्र 41
नवांकुर 43
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्. 45
தமிழமுது 46
அருள் உலா 47

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
அக்டோபர்-2026	25-10-2026	01-07-2026 to 31-08-2026	05-09-2026
ஜனவரி-2027	24-01-2027	01-10-2026 to 30-11-2026	05-12-2026
ஏப்ரல்-2027	18-04-2027	01-01-2027 to 28-02-2027	05-03-2027
ஜூலை-2027	18-07-2027	01-04-2027 to 31-05-2027	05-06-2027

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

★ **D.D.** ***மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.***

our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

दुनिया में हर रोज कुछ न कुछ घटनाएँ होती रहती हैं । कुछ घटनाएँ अपने आप होती हैं तो कुछ किसी शक्ति के कारण हुआ करती हैं । पूरे भारत में दिल्ली में होनेवाली कॉकरोच जनता पार्टी के प्रदर्शन और अन्य कार्यों पर चर्चा हो रही है । देश के भावी डॉक्टरों का चयन करनेवाले नीट परीक्षा में प्रश्न पत्र का लीक होना सरासर अन्याय है । इस अपमानजनक कार्य को करनेवाले कोई भी हो उनको उचित दंड भी मिलना चाहिए । पूरे देशवासी यही चाहते हैं ।

लेकिन इस बात को राजनीतिक बनाना और भारत के नाम को कलंकित करने के उद्देश्य से किसी भी दल से प्रदर्शनी वगैरह करवाना मान्य बात हो ही नहीं सकता । कुछ लोग बोलते हैं, वे न्याय माँग रहे हैं । कुछ और लोगों का कहना है कि तिलचट्टे जो भी कर रहे हैं वह भारत के विरुद्ध देशों का खेल है। विश्व स्तर में भारत का नाम खराब करने का एक और नाटक है ।

भारत अब प्रगति के पथ पर है । पिछले एक महीने में बहुत सारे क्षेत्र में इसकी तरक्की प्रशंसनीय बनी हुई है । कहा जाता है कि कॉकरोच पार्टी के पीछे कुछ विरोधी दल और कुछ विरोधी देश मिलकर भारत का नाम बर्बाद करने के उद्देश्य से ऐसे काम कर रहे हैं । अगर यह बात सच है तो कोई भी भारतवासी इसके पीछे नहीं रहेंगे और इसका संपूर्ण मन से विरोध करेंगे । देश सबसे पहले है । भारत सिर्फ देश नहीं हम इसे अपनी माता मानते हैं । भारत माता की जय में ही जनता की भलाई है ।

भारत को अपनी माता माननेवाले कभी भी देश के विरुद्ध जो काम कर रहे हैं उनके साथ नहीं देंगे । भाषा भेद हो या प्रांत का भेद सबके लिए भारतीय जनता के लिए देश ही प्रधान है वही महान है । भारत की उन्नति में ही हमारी उन्नति निहित है । किसी भी हालत में हम अपने देश को उन्नति के मार्ग से कभी नहीं हटाएँगे । वंदे मातरम कहेंगे, भारत माता की जय कहते हुए हम यहाँ जिएँगे ।

जय हिन्द !   जय हिन्दी !!

अनमोल वचन

उसकी याद में

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर के अनुसार – पीने के बाद नशा प्रदान करनेवाले मधु से उसकी याद में ही दिल भर मधुरता भरानेवाला प्यार ही सुखप्रदा होता है ।

बहुत बड़े प्यार सहित मुझे जो मिला उसके दूर जाने पर आने वाला दुख उसकी याद करने से नहीं आता है । इसलिए प्यार हर तरफ से श्रेष्ठ है ।

आनेवाली होती है लेकिन छींक नहीं आती है । मेरे प्रिय भी मेरी याद में रहनेवाले जैसे होकर लगता है मेरी याद नहीं करते हैं ।

जिस प्रकार मेरे दिल में हमेशा के लिए मेरे प्रेमी बने रहते हैं उसी प्रकार उनके दिल में मैं हूँ क्या ?

उनके मन में मुझे स्थान नहीं देनेवाले मेरे प्रेमी मेरे मन में हमेशा के लिए आकर बसने के लिए लज्जित क्यों नहीं होते ?

उनके साथ जो रहा उसी की याद में मैं आज जीवित रहती हूँ । उनकी याद किए बिना और किसे सोचकर मैं जी सकती हूँ ?

उनको भूले बिना सदा सर्वदा उनके बारे में सोचते रहने पर भी उनकी दूरी मुझे जला रही है । उनके बारे में सोचे बिना रह जाऊँ तो पता नहीं क्या-क्या होगा ?

मैं उनकी कितनी भी याद करूँ उसके लिए मेरे प्रेमी मुझपर कभी गुस्सा नहीं करेंगे । यही उनसे मिलनेवाली बहुत बड़ी मदद है ।

चाँद तुम हमेशा के लिए प्रकाशमान रहो । मेरे प्रेमी जो मुझसे दूर न जाकर सदा पास रहे और अब दूर चले गए उनको ढूँढने के लिए तुम मेरे साथ हमेशा बने रहो ।

मन कैसे टूटता है ?

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

असर जब बाहर का पड़ता है चारों ओर से
मानव मन यह अपने आप बदलता है जोर से
सदियों की बात यह समझनी पड़ती है सबको
समझ में आ जाने पर सच्चाई बाहर आती है तब तो
शब्द कुछ ऐसे कभी नहीं थे जो हमारे पूर्वज जानते
आज तो हर बच्चा हर युवा कहता फिरता है यह कैसे?
हर चीज में तनाव हर काम में तनाव तनाव ही तनाव है
तनाव दूर करने मन को सही राह लाने करते काम अनेक है ।

कहते फिरते हैं आज के युवा अनेक बार दोहराते रहते
दिल टूट जाता है दिन रात हो जाता है सब फीका पड़ता है
छोटी–सी छोटी लड़ाई से दिल यह टूट जाता है बिलकुल
बात किसी से न होने पर दिल टूट जाता है यहाँ सचमुच
जीने का मन नहीं होता है मरना संभव भी नहीं होता है
जीवन दुर्लभ होकर दशा दिशा बदल लेता है नशा छा जाती है
कह कहकर भर देते हैं सुन–सुन कर सीख लेते हैं युवा यहाँ
तनाव भरना और दिल टूटना जीवन को ले जाता है ये कहाँ ?

ऐसे ही नहीं हुआ है जन्म तेरा इस जग में तुम जानो
माँ के गर्भ में ना कोई साथ थे ना था भरपूर प्रकाश
नौ महीने अकेले रहा अंधकार में रहा ना कुछ हुआ तुझे
उठने बैठने बोलने चलने में बहुत समय लगा तब कोई तनाव नहीं रहा
सोच समझ कर काम जब करोगे तब तुम विजय जरूर बनोगे
पाठ यह पढ़ाकर भेजे हैं भगवान तुझे इस दुनिया में जान लो
तनाव से दिल के टूटने से कुछ भी कभी नहीं बनता जान लो
सही बुद्धि से समझ बूझ से जीवन को बढ़ाना सीख लो अब से ।

कंधे पर

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

''अरे प्रणव क्यों मुँह लटकाकर बैठा है रे ? अर्जेंटीना हार गया है इसलिए क्या ? अरे मेस्सी ने तो अपना पूरा बल दिखाया । उन्होंने खेला भी बहुत अच्छे ढंग से था । खेल में तो हार-जीत होता ही है रे । तुझे पता है जितना स्पेन में लोग जश्न मना रहे हैं उतना ही प्यार और भरपूर खुशी के साथ अर्जेंटीनावाले अपने टीम को भी अपने देश में आदर और प्यार का प्रदर्शन किया था । उसके लिए तुम मुँह लटका के क्यों बैठा है ?'' प्रणव को चिढ़ाते हुए नवीन ने कहा ।

''बात वह नहीं है रे'' चिढ़ते हुए प्रणव ने उत्तर दिया ।

''अरे अभी मैं सही पकड़ा । तुम तिलचट्टे के हड़ताल में भाग लेना चाहते हो क्या ? अरे हम दिल्ली में नहीं, कोयंबटूर बैठे हैं । अब वहाँ जाना और उसमें भाग लेना सब मुमकिन नहीं है । तुझे पता है कुछ लोग बोलते हैं वे न्याय माँग रहे हैं । कुछ और लोगों का कहना है कि तिलचट्टे जो भी कर रहे हैं वह भारत के विरुद्ध देशों का खेल है । विश्व स्तर में भारत का नाम खराब करने का एक और नाटक है । छोड़ो हमें उससे क्या है ? अब तुम अपने बारे में बताओ ।''

प्रणव ने नफरत भरे शब्दों से कहा, ''बात मेरे बाप के बारे में है । पता नहीं किस जन्म का बदला ले रहे हैं । हर बात में कुछ न कुछ दोष निकाल लेते हैं और बेफालतू चिल्लाते रहते हैं ।''

नवीन ने प्रणव के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, ''अरे यह तो हर घर में होता है । हर बाप अपने बेटे को कुछ न कुछ कहते ही रहता है । देख प्रजित आ रहा है । वह भी तेरे जैसा ही है न, हर रोज अपने पिताजी के बारे में कुछ ना कुछ शिकायत करता ही रहता है । छोड़ो यार, यह तो बापों का ट्रेडमार्क लक्षण है । तुम भी जब बाप बनोगे ना तब यही करोगे । मैं तो अपने पिता के बारे में सोचता तक नहीं हूँ ।''

बात सुनते हुए प्रजित हँसते हुए बोला, ''अरे मेरे पिताजी इतने बुरे भी नहीं हैं । लेकिन हाँ डाँटते तो जरूर हैं । तुम लोग तो ऐसे बात कर रहे हैं जैसे कि बाप के विरुद्ध एक नया संघ शुरू करनेवाले हैं । अगर ऐसा एक संघ शुरू करेंगे ना तो सारे के सारे लड़के उसके सदस्य हो जाएँगे ।''

तीनों की बात सुनते हुए उनकी प्राध्यापिका ने उन्हें वर्ग के अंदर बुलाया ।

हँसते हुए प्राध्यापिका ने कहा, ''क्या आप लोग हमेशा अपने पिताजी की

बुराई करते रहेंगे या पढ़ने में भी ज़रा ध्यान देंगे ? इस उम्र में लड़कों को अपना पिताजी हीरो नहीं विलेन लगते हैं ।''

''आप तो ऐसे ही कहेंगे तीनों ने एक स्वर में कहा । लड़कियों को पिता लोग इतना नहीं डाँटते जितना लड़कों को डाँटते हैं । लड़कियाँ तो पिता की परी होती हैं । मार खाने वाले तो हम ही होते हैं ना ?''

प्राध्यापिका मुस्कुराईं, ''ठीक है मैं आपसे एक सवाल पूछती हूँ । आपको पता है माँ बच्चे को कैसे उठाती है ?''

''यह क्या बड़ी बात है'' प्रजित ने हाथ बढ़ाते हुए बताया, ''माँ अपने बच्चे को गोद में उठाती है ।''

''और पिताजी ?'' प्राध्यापिका ने पूछा, ''पिताजी उठाते हैं तो अपने बच्चों को वह कहाँ रखते हैं ?''

नवीन तुरंत बोला, ''मेरे ख्याल से ज्यादातर पिता लोग अपने बेटे को कंधे पर बिठाते हैं ।''

''सही कहा नवीन तुमने ।'' प्राध्यापिका की आवाज अब नरम हो गई ।

''हर पिता अपने बेटे को अपने से भी बड़े पद में देखना चाहता है । अपने बेटे को सर्वोच्च स्थान में देखना एक पिता का लक्ष्य होता है ।

एक पिता अपने पुत्र से गुस्सा करता है तो इसका मतलब है वह अपने पुत्र से बेहद प्यार करता है । अपने पुत्र की भलाई के लिए उसे सब प्रकार से योग्यवान देखने के लिए कड़वी शब्दों का प्रयोग करता है । यह दवा जैसी है जो पहले कड़वी होती है लेकिन उसका असर तो लाभदायक होता है ।

अगर आपके पिता आपसे प्यार नहीं करते तो शहर के एक नामी कॉलेज में आपकी भर्ती नहीं कराते ।''

प्राध्यापिका की बातों से तीनों के गर्दन झुक गए ।

''अपने लक्ष्य तक पहुँच कर अपने ही नहीं अपने पिताजी के भी गर्दन ऊँचा करना । यह तो जिंदगी में सबसे जरूरी बात है और समझने की बात है ।''

यह कहते हुए प्राध्यापिका वर्ग में अपने विषय पर ध्यान देने लगीं ।

तीनों को लगा महाविद्यालय का यही सबसे महानतम शिक्षाप्रद विषय रहा है । अपने पिताजी का चेहरा सामने लाते हुए तीनों पढ़ाई में ध्यान देने लगे । अब तो वे अपने लक्ष्य तक जरूर पहुँच जाएँगे ।

✻ पिता सिर्फ रिश्ता नहीं, बल्कि जीवन का परम भूत आधार है । ✻

बाल साहित्य लेखन की महती आवश्यकता

– डॉ. राजेश कुमार शर्मा 'पुरोहित',

झालावाड़, राजस्थान

बच्चे अपने परिवार, पास–पड़ोस, अपने विद्यालय, अपने परिवेश से बहुत कुछ सीखता है । वातावरण विचारों आदर्शों लक्ष्यों और शब्दों से सांस्कृतिक वातावरण बनता है । छोटे बच्चे बड़ों का अनुकरण करते हैं । घर पर माता पिता भाई बहिन व विद्यालय में शिक्षकों का अनुकरण करते हैं । जिस घर में गीता रामायण प्रतिदिन पढ़े जाते हैं वे बच्चे चौपाई, दोहे छंद, सोरठा, रोला सीख जाते हैं । दृष्टांत सुनना व सुनाना उन्हें याद हो जाता है । वे गीता के श्लोक बोलना उनके अर्थ बताना जानते हैं ।

बाल्यावस्था में जिज्ञासा की प्रवृति तेज होती है । बच्चों को ऐसे समय बाल साहित्य की जरूरत पड़ती है । ऐसा साहित्य जिसमें कहानियाँ ऐसी हो जो जीवन निर्माण के लिए जरूरी हो । शिक्षाप्रद हों । प्रेरक प्रसंग महापुरुषों की जीवनियों की पुस्तकें वैज्ञानिकों की जीवनियाँ कविताओं की किताबें आदि बाल साहित्य बच्चों को उपलब्ध कराना चाहिए । घर पर अभिभावक भी किताबें पढ़ें । ताकि बच्चे अनुकरण कर स्वाध्याय करना सीख सकें ।

बालक को सुसंस्कारित करने हेतु सामाजिक प्राणी बनाने के लिए जितनी भी परम्पराएँ नियम और वस्तुओं विकास की कहानी बतानी होती है ये सभी संस्कृति के अंग हैं ।

बालक हमेशा आनंद के लिए उत्सुक होता है । बालक की रुचियों को पहचान कर उनकी ही भाषा में लिखे गए मनोरंजक साहित्य को बालक अवश्य अपनाते हैं आज बाल साहित्य की बहुत आवश्यकता है । पहले दादा दादी नाना नानी लॉज कथाएँ सुनाया करते थे । लोक कथा का उद्भव बाल जीवन से ही आरम्भ हो जाता है । लोककथा का अर्थ है लोगों द्वारा किये गए कार्यों को शब्द साहित्य द्वारा रेखांकित कर कहानी रूप में व्यक्त करना । यह साहित्य बालकों के लिए कल्पनाशील साहित्य है । आज की पत्र–पत्रिकाओं में बाल साहित्य बहुत कम प्रकाशित होता है जो चिंताजनक हैं ।

बढ़ते तकनीकी युग में बच्चे टी.वी. कम्प्यूटर मोबाइल विडीओ गेम ज्यादा खेलने लगे हैं । बच्चे कल की दुनिया की नींव हैं । हमारा भविष्य अंधकार में हैं ।

बाल साहित्य विकास की आधार भूमि तैयार करता है । बच्चों की जिज्ञासाओं को शांत करता है बाल साहित्य । बिना बाल साहित्य के स्वस्थ समाज की कल्पना बेकार है । आज हर भाषा में बाल साहित्य छपने की जरूरत हैं ।

लेपटॉप टेबलेट मोबाइल में बच्चा उलझ कर असमय ही अनेक शारीरिक व मानसिक रोगों का शिकार हो रहे हैं । न समय से सोते है और न ही समय से जागते हैं । न व्यायाम कसरत योग करते हैं । न शारीरिक खेल खेलते हैं ।

बाल साहित्य की अनेक विधाएँ हैं । बाल उपन्यास, चित्र कथाएँ, नाटक, जीवनियाँ और ज्ञान विज्ञान की कहानियाँ आदि ।

पँचतंत्र, देवपुत्र, बालहँस, बाल वाटिका, नंदन-चम्पक, बाल भास्कर, चंदा मामा, किशोर प्रभात-पराग आदि पुस्तकें बच्चों को बहुत पसंद हैं । पँचतंत्र नामक पुस्तक में जो कहानियाँ छपती हैं उनमें पशु पक्षियों को माध्यम बनाकर बच्चों के लिए कहानियाँ लिखी गई हैं ।

बाल साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना ही नहीं होता बल्कि आज के जीवन की सच्चाई से बच्चों को परिचित कराना है । चरित्र निर्माण के लिए बाल साहित्य की आवश्यकता है । यही बच्चे चाँद पर अंतरिक्ष में ग्रहों पर भविष्य में यात्रा करेंगे ।

बच्चों के बाल साहित्य हेतु चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट की स्थापना 1957 में की गई थी । इस ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य बच्चों के लिए उचित डिजाइनिंग व सामग्री उपलब्ध कराना है । यह ट्रस्ट 5 वर्ष से 16 वर्ष तक के बच्चों के लिए बाल साहित्य उपलब्ध कराता है ।

हमारे देश में अनेक बाल साहित्यकारों ने बाल साहित्य विपुल मात्रा में लिखा है, जिनमें प्रमुख हैं श्रीधर पाठक, महावीर प्रसाद, अयोध्या सिंह उपाध्याय, अरविंद कुमार साहू, भेरूलाल गर्ग, राजकुमार जैन राजन, अब्दुल मलिक खान, डॉ. राजेश कुमार शर्मा पुरोहित, दीनदयाल शर्मा, मनोहर चमोली, मन्नू भंडारी आदि ।

हम बच्चों को राम कृष्ण, गाँधी, गौतम बनाने के लिए तैयार हो जाते हैं लेकिन उनमें संस्कार नहीं डालते । आज का बच्चा रोबोट तो बन जायेगा कि हमारे देश की संस्कृति व संस्कार समाप्त हो जाएँगे ।

बाल साहित्य के प्रति हमारी सकारात्मक सोच होना जरूरी है । हम सभी का प्रयास हो बच्चे बाल साहित्य पढ़ संस्कारवान बनें ।

सूरदास जी ने बहुत बाल साहित्य लिखा जिसमें बाल क्रीड़ा, हाव, भाव, बाल लीलाओं का सजीव वर्णन किया । तुलसीदास जी ने रामचरित्र मानस कृति में बाल कांड में बाल मनोविज्ञान की अनुपम मनोहारी झाँकियाँ प्रस्तुत की । आज भी ऐसे ही बाल साहित्य की पुनः जरूरत है ।

बारी का इंतज़ार

– डॉ. शिखा अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

सुबह से देर रात तक पाँच दिन काम करनेवाले महानगर के लोग शनिवार के दिन अपने घर के काम निपटाने और आराम करने के बाद शाम को घूमने और बाहर खाने निकले थे ।

एक बड़े और महंगे रेस्टोरेंट से कुछ दूरी पर खड़े ठेलों पर मोमोज, छोले भटूरे, कुलचे, इडली सांबार, और कई तरह की चाट खा रहे युवा लोगों की भीड़ थी ।। बड़ी चमचमाती गाड़ियों से रेस्टोरेंट में जाते लोग ठेलों पर खा रहे लोगों को हिकारत से देख रहे थे । वहीं इन ठेलों के आस पास दो छोटे, पतले–दुबले, भूखे बच्चे ललचाई नजरों से मंडरा रहे थे । जैसे ही कोई अपनी प्लेट डस्टबीन में डालता तो वे बच्चे लपक कर उस पर लगी जूठन खाने लगते ।

ठेलों के पास एक कुत्ता भी उन बच्चों के साथ खड़ा था । बच्चे जैसे ही जूठन खा कर प्लेट फेंकते तो कुत्ता उस प्लेट को चाट कर भूख मिटाने का प्रयास करता ।

थोड़ी दूर अंधेरे कोने में फुटपाथ पर एक मैली कुचैली बूढ़ी औरत रोटियों पर साग रख कर खाते हुए यह दृश्य देख रही थी । उस औरत ने अपनी रोटी के कुछ टुकड़े किये और जूठन खाने के लिए अपनी बारी का इंतज़ार करते भूखे बच्चों और कुत्ते की तरफ बढ़ गई ।

Revised Book fee for VANI VIKAS Exams

from January-2027 Exams

Vani Vikas Grade-1 ... ₹ 300	Vani Vikas Grade-5 ... ₹ 340
Vani Vikas Grade-2 ... ₹ 310	Vani Vikas Grade-6 ... ₹ 350
Vani Vikas Grade-3 ... ₹ 320	Vani Vikas Grade-7 ... ₹ 360
Vani Vikas Grade-4 ... ₹ 330	Vani Vikas Grade-8 ... ₹ 370

सब से ऊपर राष्ट्र - धर्म है

– श्री. गजानन पाण्डेय,
हैदराबाद, तेलंगाना

सब से बढ़कर 'राष्ट्र – धर्म' हमारे लिए मायने रखता है ।

क्योंकि धरती और भारत 'माँ' का हम पर बहुत उपकार है ।

वह सेवा, त्याग व धैर्य का रूप है । धरती हमें आश्रय देती है । सुख–समृद्धि प्रदान करती है ।

आजादी के बाद देश के नव–निर्माण का हम पर बड़ा उत्तरदायित्व है । हमें अपने शहीदों के सपनों को पूरा करना है ।

भारत, अनेक भाषा, जाति व धर्म (संप्रदाय) के माननेवालों का देश है । भारत एक सुर में 'जय हिन्द' और 'वंदे मातरम्' का नारा लेता है । भारत के संविधान की अष्टम अनुसूची में समादृत 22 भाषाओं में संवाद करता है ।

भारत सरकार के गृह मंत्री के शब्दों में, 'जहाँ तक देश का सवाल है, भाषा सिर्फ संचार का माध्यम नहीं है, यह राष्ट्र की आत्मा है ।'

इस अर्थ में, देश की भाषाएँ एक–दूसरे की पूरक हैं ।'

उनके बीच विवाद का कोई कारण नहीं है ।

गृह मंत्री, शाह ने कहा है 'मेरा पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ मिलकर देश की संस्कृति के स्वाभिमान को और बढ़ा सकती है ।'

पाकिस्तान पर 'आपरेशन सिंदूर' के दौरान हम ने अपनी आधुनिक सैन्य शक्ति व रक्षात्मक युद्ध–कौशल का परिचय दिया उसे देखकर दुनिया स्तब्ध है ।

अतः हमें भारत के हितों को सर्वोपरि रखते हुए, एक नागरिक के रूप में एकजुटता का परिचय देना होगा क्योंकि सब से ऊपर 'राष्ट्र–धर्म' है ।

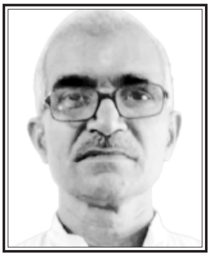

लघुकथा

बुढ़ापे की लाठी

– डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय,
प्रयागराज, उ.प्र.

आज सुबह सुबह से ही जगदीश भाई का फोन दो बार आ चुका है और बात नहीं हो पायी है। तीसरी बार फोन की घंटी फिर बजी तो बयासी वर्षीय नारायन बाबू ने कांपते हाथों से उठा लिया, उधर से आवाज आई –

कैसे हैं नारायन बाबू तबियत तो ठीक है न ?

अभिवादन के पश्चात नारायन बाबू वेदना भरे शब्दों में बोले –

जी भाई तबियत ठीक है लेकिन जब से मेरे पैंतीस वर्ष के होनहार शिक्षक पोते की हत्या कर दी गई...

तब से पूरा परिवार बहुत व्यथित रहता है। मेरा जीवन तो बहुत ही सुखमय हो गया था किन्तु मेरे बुढ़ापे की लाठी क्रूर हत्यारे छीन ले गए।

जगदीश भाई क्या बताऊँ ? एकदम अंधेरा–सा छा जाता है, कुछ समझ में भी नहीं आता है। मेरा इकलौता पोता हमारे पूरे परिवार का भरण पोषण करनेवाला था। सुबह विद्यालय के लिए निकला था जो जीवित लौट कर नहीं आया। पूरा दो महीना बीत गया अभी तक कुछ नहीं हुआ। अब तो आप लोगों का फोन ही सहारा बन गया है, किंतु यह भी कभी–कभी मिल पाता है। इस जघन्य हत्या के पखवाड़े भर बाद प्राथमिकी लिखी गई किन्तु डेढ़ महीने से केवल जाँच ही चल रही है। अब तो ईश्वर की जो इच्छा होगी वही होगा। इतना कह कर नारायन बाबू फफक पड़े। जगदीश भाई ने कहा, मुझे सूचना मिल गई थी। अपने कार्यालय से आठ वर्ष पूर्व कार्यमुक्त होने के बाद कहीं आने–जाने की स्थिति में नहीं रह गया हूँ। आप धैर्य रखिये। सब ठीक हो जाएगा। आपका पोता नहीं, हम तो हैं न। हम लोग मिलजुलकर कुछ न कुछ व्यवस्था कर ही लेंगे। इसी के लिए तो हम सभी सेवानिवृत्त साथियों ने एक कल्याणकारी संस्था बनाई है, जो सभी के बुढ़ापे की लाठी बनती है। आपकी भी बनेगी।

सुनकर नारायण बाबू के आँखों में प्रसन्नता मिश्रित आँसू बह निकले। उन्हें बुढ़ापे की लाठी जो मिल गयी थी।

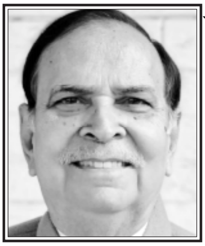

लघु कथा

चापलूसों का घेरा

– श्री. प्रेम विज,
चंडीगढ़

एक नगर में विक्रम सिंह नाम का उद्योगपति रहता था । मेहनत और ईमानदारी से उसने बड़ा व्यवसाय खड़ा किया था । शुरू–शुरू में वह हर कर्मचारी की बात ध्यान से सुनता और सही सलाह को स्वीकार करता था । इसी कारण उसका व्यापार लगातार बढ़ता गया ।

धीरे–धीरे सफलता ने उसके मन में अहंकार भर दिया । अब उसे अपनी हर बात सही लगने लगी । उसके आसपास कुछ ऐसे लोग इकट्ठे हो गए जो हर समय उसकी झूठी प्रशंसा करते रहते ।

''सर, आपसे बुद्धिमान कोई नहीं ।''

''आप जो निर्णय लेते हैं, वही अंतिम सत्य है ।''

इन मीठे शब्दों ने विक्रम सिंह को इतना प्रभावित किया कि उसने अनुभवी कर्मचारियों की सलाह सुनना ही बंद कर दिया । जो सच बोलता, उसे वह अपना विरोधी समझने लगा । कई ईमानदार लोग नौकरी छोड़कर चले गए, लेकिन चापलूस वहीं बने रहे क्योंकि उन्हें अपना स्वार्थ साधना था ।

एक दिन कंपनी ने बिना सोच–समझे बहुत बड़ा निवेश कर दिया । अनुभवी कर्मचारियों ने पहले ही खतरे की चेतावनी दी थी, लेकिन उनकी बात अनसुनी कर दी गई । कुछ ही महीनों में कंपनी को भारी नुकसान हुआ । संकट आते ही वही चापलूस लोग दूसरी कंपनियों में चले गए । जो हर समय उसकी प्रशंसा करते थे, वे एक बार भी उसका साथ देने नहीं आए ।

विक्रम सिंह अकेला बैठा सोच रहा था । तभी उसके पुराने लेखाकार ने कहा, ''मालिक, आग केवल चिंगारी से नहीं फैलती, कभी–कभी उसे भड़काने के लिए घी भी चाहिए होता है । आपके अहंकार की चिंगारी को चापलूसी ने आग बना दिया ।''

उस दिन विक्रम सिंह को अपनी भूल का एहसास हुआ । उसने फिर से विनम्रता अपनाई, योग्य लोगों की बात सुननी शुरू की और अपनी गलतियों को स्वीकार किया । धीरे–धीरे उसका व्यवसाय फिर संभल गया ।

अपना खयाल रखिए

– श्री. गीतांजलि बरकटकी,
नामरूप, असम

जो कुछ मैं आपसे कह रही हूँ, दरअसल, वही बातें मैं स्वयं से कह रही हूँ।

अपना खयाल रखिए। सबका जीवन मंगलमय हो – यही मेरी प्रार्थना है।

स्वयं से प्रेम कीजिए, जैसे धान का पौधा अपनी बालियों से प्रेम करता है; जैसे बोहाग कोयल से प्रेम करता है; जैसे आकाश बादलों को अपनाता है; जैसे बादल बरसात को जन्म देते हैं; जैसे किसान हल से प्रेम करता है; और हल मिट्टी की सोंधी महक से।

जैसे माँ अपने बच्चे से प्रेम करती है, और बच्चा माँ की ममता से –

उसी तरह आप भी स्वयं से प्रेम करना सीखिए।
अपना खयाल रखिए।
अँधेरी रात के मंत्र–जड़े ताबीज़ों को फेंक दीजिए।
बेनूर दिनों को पीछे छोड़ दीजिए।
ईर्ष्या और कपट को अपने से दूर रखिए।
अपना खयाल रखिए, और सबसे प्रेम कीजिए।

सम्मान

– श्री. मोहित.जे.
संतोष, कोवै,
तमिलनाडु

ज़िंदगी है एक मंच,
जहाँ हम हैं उसमें कठपुतलियाँ।
हमें चलाता है भगवान,
और उसके मार्ग पर चलता है हर इंसान।

जो खामोश है, वह कमज़ोर नहीं,
और जो बातूनी है, वह सही नहीं।
यहाँ सब है विचित्र,
यह है ज़िंदगी का चित्र।

जिसके पास है कोशिश और आत्मसम्मान,
उसको मिलता है जीत का सम्मान।
और जो रहता है आलसी,
उसको मिलता है हार और अपमान।

जब मुश्किल में जिसके पास है हिम्मत,
उसमें भी है बहुत सारी ताकत।
इस गुण से तुम रखो अगले कदम,
फिकर के बिना रहोगे तुम हरदम।

पर्यावरण-संरक्षण

– डॉ. त्रिलोकी सिंह,
प्रयागराज, उ.प्र.

पर्यावरण बचाइए, यह भू का श्रृंगार ।
युगों-युगों से है यही, जीवन का आधार ।। 1 ।।

अगर बचा पर्यावरण, तभी बचेंगे प्राण ।
करे शुद्ध परिवेश ही, सभी दुखों से त्राण ।। 2 ।।

वन-उपवन, निर्झर-सरित्, सब हैं सुख के मूल ।
इन्हें छेड़ने की मनुज ! करना कभी न भूल ।। 3 ।।

प्राण-वायु मिलती हमें, वृक्षों से दिन-रात ।
जाड़ा हो या ग्रीष्म ऋतु, अथवा हो बरसात ।। 4 ।।

तरु भूषण हैं अवनि के, जाना इसे न भूल ।
वृक्षों से मिलता हमें, कंद-मूल,फल-फूल ।। 5 ।।

नित्य पूज्य कुछ वृक्ष हैं, करते देव निवास ।
उनका पूजन है सुखद, जन-जन का विश्वास ।। 6 ।।

वृक्षों को काटें नहीं, यह है अनुचित कर्म ।
वृक्ष लगाना है सखे ! हर मानव का धर्म ।। 7 ।।

स्वस्थ रहे पर्यावरण, स्वस्थ रहें सब लोग ।
हरियाली हो भूमि पर, जन-जन रहें निरोग ।। 8 ।।

वृक्षों से हर पल मिले, हमें शुद्धतम वायु ।
इससे ही हर मनुज को, मिलती लम्बी आयु ।। 9 ।।

औषधीय गुण से भरे, होते वृक्ष अनेक ।
नीम, बेल, पीपल प्रभृति, वृक्ष एक से एक ।। 10 ।।

दूषित पर्यावरण से, जीवन होता नर्क ।
स्वस्थ देह-मन के लिए, रहिए सदा सतर्क ।। 11 ।।

उत्तम पर्यावरण पर, सदा दीजिए ध्यान ।
मिल-जुल पूरा कीजिए, तरु-रोपण अभियान ।। 12 ।।

छोड़ी

– श्री. अनंग पाल सिंह भदौरिया 'अनंग',
ग्वालियर, म.प्र.

ईश्वर पाने हेतु लगाते, मंदिर के चक्कर ।
नहीं मिलेगा वह मंदिर में, ना किताब पढ़कर ।।
रटो रात-दिन मंत्र-जंत्र या पूजा-पाठ करो ।
ज्ञान उधारी का लेकर, अपने मनमाहिं भरो ।।
जबतक नहीं स्वयंको जाना, वह न मिले आकर ।
ईश्वर पाने हेतु लगाते मंदिर में चक्कर ।। 1 ।।

अपने ही घर बना अजनबी, बैठा है ईश्वर ।
कैसे जा पाओगे बोलो, परम तत्व दर पर ।।
जो तुमको ढो रहा उसीकी, तुमको लगी फिकर ।
ईश्वर पाने हेतु लगाते मंदिर के चक्कर ।। 2 ।।

मंदिर तुम ने ही बनवाए, बैठाया ईश्वर ।
अपने अंदर से निकाल कर, उसे किया बाहर ।।
अब जाते हो उससे मिलने तुम मंदिर अंदर ।
ईश्वर पाने हेतु लगाते मंदिर के चक्कर ।। 3 ।।

भले निकाल दिया हो बाहर, पर वह गया नहीं ।
चला रहा वह देह आपकी, रहकर यहीं कहीं ।।
उसे दौड़कर पा लोगे, यह भ्रम सबका अक्सर ।
ईश्वर पाने हेतु लगाते मंदिर के चक्कर ।। 4 ।।

अंतहीन है दौड़ आपकी, अब तो थम जाओ ।
और एक पल शांत भाव से, थोड़ा जम जाओ ।।
करो स्मरण खुदका खुद में, जाओ तनिक ठहर ।
ईश्वर पाने हेतु लगाते मंदिर के चक्कर ।। 5 ।।

जाओगे पहचान स्वयं को, जैसे ही जिस क्षण ।
समझ जाओगे ढूंढ़ रहे क्या, वैसे ही उस क्षण ।।
तुम्हें तुम्हारी याद दिलाने, को शरीर तत्पर ।
ईश्वर पाने हेतु लगाते मंदिर के चक्कर ।। 6 ।।

संत वचन केवल माध्यम है, मंजिल मत मानो ।
बाहर सिर्फ व्यवस्थाएँ हैं, बस इतना जानो ।।
भटक रहे हैं हम दुनिया के, चक्कर में पड़ कर ।
ईश्वर पाने हेतु लगाते मंदिर के चक्कर ।। 7 ।।

ठीक न होगी अगर व्यवस्था, अपने अंदर की ।
शांति नहीं आ सकती अंदर, कोई बाहर की ।।
वस्तु नहीं है बाहर की, कोई अपना ईश्वर ।
ईश्वर पाने हेतु लगाते मंदिर के चक्कर ।। 8 ।।

समझ इशारा सद्गुरुओं का, ठहरो शांत रहो ।
निकलो शब्द जाल से बाहर, जग में भ्रांत न हो ।।
सच्ची याददाश्त लौटेगी, खुद के ही अंदर ।
ईश्वर पाने हेतु लगाते मंदिर के चक्कर ।। 9 ।।

ज्यों ही होता बोध स्वयं का, ईश्वर मिल जाता ।
मैं ही वह है, मुझमें में ही वह, अंतस् खिल जाता ।।
दुनिया के तनाव, पीड़ा की, रहती नहीं खबर ।
ईश्वर पाने हेतु लगाते मंदिर के चक्कर ।। 10 ।।

असली सुख अपने अंदर था, भूले रहे सदा ।
जैसे ही स्मरण हुआ सब चली गई विपदा ।।
दूर नहीं परमेश्वर हमसे, रहता है अंदर ।
ईश्वर पाने हेतु लगाते मंदिर के चक्कर ।। 11 ।।

जरा ठहरकर शांत चित्त हो, अपना ध्यान करो ।
अपने अंदर अपनेपन का, एक विधान करो ।।
सागर वा सागर की लहरें, दोनों ही जलधर ।
ईश्वर पाने हेतु लगाते मंदिर के चक्कर ।। 12 ।।

धोखा देना बंद करो, मत अब भागो -दौड़ो ।
ठीक करो आंतरिक अवस्था, बेहोशी छोड़ो ।।
अंतहीन, आनंद मयी, उत्सव अपने को कर ।
ईश्वर पाने हेतु लगाते मंदिर के चक्कर ।। 13 ।।

फेक न्यूज़ और प्रोपेगैंडा

– श्री. चन्द्रकांत खुंटे 'क्रांति',
जांजगीर, छत्तीसगढ़

कारख़ानों में अब सिर्फ़ लोहा नहीं ढलता
अब आईटी सेल के वातानुकूलित कमरों में
रोज़ सुबह एक नया सच गढ़ा जाता है
फैक्ट्रियों के सायरन की तरह
यहाँ से छूटते हैं नफ़रत के हैशटैग
जो मिनटों में तुम्हारी नसों का खून खौला देते हैं ।
तुम्हारी स्क्रीन पर जो तैर रहा है
वह सूचना नहीं ज़हर की खुराक है
एक कटी हुई वीडियो क्लिप
एक झूठी हेडलाइन
और एक मनगढ़ंत इतिहास का पन्ना
इतना ही काफ़ी है
एक भाई का हाथ दूसरे भाई के गले तक पहुँचाने के लिए ।
वे दंगे जो कभी सड़कों पर शुरू होते थे
अब तुम्हारे व्हाट्सएप ग्रुपों में जन्म लेते हैं
तुम जिसे अपनी राय कहते हो
वह दरअसल किसी पीआर एजेंसी का ड्राफ्ट है
तुम्हारी नफ़रत को मोनिटाइज़ किया जा चुका है
तुम्हारे गुस्से की टीआरपी तय होती है
और तुम्हारी अंधी आस्था के दम पर
सिंहासन अपनी उम्र बढ़ाते हैं ।
सच्चाई घुटनों के बल बैठी है

फैक्ट–चेक की लाश पर
फेक न्यूज़ का गिद्ध जश्न मना रहा है
अब किसी तानाशाह को सेना की ज़रूरत नहीं
उसे सिर्फ़ एक बिकाऊ अल्गोरिदम चाहिए
जो जनता को सच देखने ही न दे ।
उठो और अपनी आँखों पर छपे इस झूठ को धो डालो
सवाल करो हर उस फॉरवर्ड मैसेज से जो तुम्हें डराता है
संदेह करो हर उस ख़बर पर जो तुम्हें बाँटती है
वरना इस डिजिटल प्रोपेगैंडा के दौर में
तुम ज़िंदा तो रहोगे
पर तुम्हारी सोच की हत्या बहुत पहले हो चुकी होगी ।।

छंद– रेणकी

बरसात

– श्री. वंदना ब्रह्मभट्ट 'नेह',
वडोदरा, गुजरात

रव गडडड गडड गडड कर गरजत, बरसत बादल शोर करी ।
नभ कड़कत कडड कडड कर बिजुरी, नरतन करती तेज धरी ।।
थइ थइ थइ 'नेह', मयूरा थिरकत, कोकिल मनहर गान करे ।
चातक जल सुजल, घटक कर पीबत, ड्रउ ड्रउ दादुर शोर सरे ।।
वन उपवन हरित वसन धर पावन, अनुपम सुंदर सृष्टि बनी ।
मल्हार बहार, मगन मन गावत, जन मन डोलत राग सुनी ।
कल कल जल करत, बहत अति उन्मत, सरिता सागर को तरसे ।
सर सर सर पवन बहत मन भावन, अधिक कृषक मन जो हरसे ।।

**பரிச்சயா மற்றும் ப்ராத்மிக் முதல் பிரவீண்
வரையிலான தேர்வுகளுக்குரிய கைடுகள்
விற்பனைக்கு தயாராக உள்ளது.**

पैसे की महिमा

– श्री. राम कृष्ण रस्तोगी,
गुरुग्राम, हरियाणा

पैसे को आगे रखो, सब काम तुम्हारे होते जायेंगे ।
पैसे को मुर्दो के आगे फैको वे भी बढ़ते जायेंगे ।।
पैसे में इतना दम है, वह मरे हुए को दम देगा ।
बिन पैसे के तो आज कोई भी न उठने देगा ।।
पैसे की महिमा इतनी भारी बिगड़े काम बनायेगा ।
बिन पैसे के तो कोई काम भी न बन पायेगा ।।
पैसा खुद बोलता है, भले ही तुम चुपचाप रहो ।
पैसे बिन कुछ न होगा, भले ही तुम चिल्लाते रहो ।।
पैसे से सब रिश्ते नाते, इससे सब काम होते हैं ।
पैसे बिन तो, सगे बेटे भी अपने भी नहीं होते हैं ।।
पैसे बिन तो, भगवान के भी दर्शन नहीं होते हैं ।
पैसे जेब में है तो बिना लाइन के दर्शन होते हैं ।।
पैसे के बिन तो कवि लेखक भी न लिख पाते हैं ।
पैसे रखो हथेली में वे ही महिमा गान सुनाते हैं ।।
पैसे बिन कारोबार न होवे, भले ही बुद्धिमान हो ।
पैसा तो हर जगह पुजता, भले ही बेईमान हो ।।
पैसा बना है गोल, सभी इसके चक्कर लगाते हैं ।
जैसे गोल सूर्य के, सभी ग्रह चक्कर लगाते हैं ।।
पैसे बिन शादी न होवे, भले ही विश्व सुंदरी हो ।
पैसे से हो जायेगी शादी, भले ही कानी चुन्दी हो ।।
पैसे की महिमा कितनी सुनाऊँ सुनते-सुनते थक जाओगे ।
पैसे की लालसा तभी खत्म होगी जब गहरी नींद सो जाओगे ।।

बाईक पर बंधी इंसानियत...!

– श्री. संजय एम. तराणेकर,
इन्दौर, म.प्र.

कंधों का धर्म भी सुविधा के दर पे हार गया,
पिता का दुःख ''बाईक'' का सफ़र बन गया ।
वो चार कंधों से सीट पर सिमटकर रह गया,
अनजाने 10 किलोमीटर का सफ़र बन गया ।

आज जिसे फूलों की सेज नसीब होना थी,
चादर में लिपटी धूसर राहों से गुज़र रही थी ।
और सभ्यता की ऊँची इमारतें मौन खड़ी थी,
यहाँ तमाशाइयों की भीड़ नज़र ना आई थी ।

यह केवल एक ''बेटी'' की अंतिम विदाई नहीं,
ये व्यवस्था की संवेदनाओं का जनाज़ा सही ।
जहाँ बिन ट्रैफिक़ एम्बुलेंस के पहिए रुक गए,
वहाँ मजबूरी के साये पेड-पौधे भी झुक गए ।

इतिहास के पन्नों पर इस दर्द को दर्ज करना,
ताकि आनेवाली जेन जी पीढ़ियाँ जान सकें
कि गाइज़ एक दौर ऐसा भी हुआ करता था,
लाश से पूर्व इंसानियत को मरना पड़ता था ।

आओ संकल्प लें, अब ऐसी कोई राह न बचे,
जहाँ किसी पिता-भाई,परिवार व पालक को !
अंतिम यात्रा मजबूरी में ऐसे पूरी करना पड़े ?
सच्चे संवेदनशील समाज में सभी साथ खड़े ।

(संदर्भ – नाबालिग बेटी की लाश बाईक पर ले गए ।)

जरा आगे बढ़कर तो देखो

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

परंपराओं से आगे ज़रा बढ़कर तो देखो,
पुरातन झंझावातों से थोड़ा उबरकर तो देखो ।
बदल दो उस व्यवस्था को,
जो रोकती हो आगे बढ़ जाने से,
समय के साथ कदमताल मिलाने से ।

हर व्यवस्था समय के साथ बदलती है,
हर युग अपनी नई मान्यताएँ गढ़ती है ।
यदि जकड़े रहोगे बीते हुए विचारों में,
तो जड़ता किसी की भी चेतना को ही कुतरती है ।

पगडंडियों और बैलगाड़ियों से निकलकर,
हम रेल और हवाई सफ़र तक आ गए ।
जिन्होंने समय की चाल पहचानी,
वे दुनिया भर में अपनी पहचान बना गए ।

जब उड़ने को नए पंख निकल आते हैं,
घिसी-पिटी राहें फिर कहाँ सुहाते हैं ।
जब व्यवस्था किसी योग्य को ठुकरा देती है,
तभी एक नया विचार जन्म लेता है,
और संभावनाओं का नया आकाश देता है ।

न्यूटन, डार्विन, आइंस्टीन आज भी इसलिए याद हैं,
क्योंकि उनके विचार समय से आगे थे ।
विचार ही मनुष्य को राह दिखाते हैं,
विचार ही उसे नई उड़ान दे जाते हैं ।

आगे बढ़ने के लिए नई सोच ज़रूरी है;
सिर्फ़ जन्म लेना, खाना-पीना और मर जाना ही
जीवन नहीं होता,
विचारों से समाज बदलना ही
जीवन की पूर्णता है ।

हमने जिसको अपना समझा

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

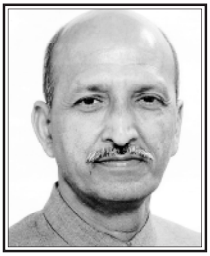

हमने जिसको अपना समझा, विश्वास जताया,
लूट रहे अपनों को अपने, देख कर मन घबराया ।
जिन लोगों से बात करी थी, सबसे धोखा खाया,
सोच रहा हूँ जगत स्वार्थी, क्या खोया क्या पाया ?

हमने जिसको अपना समझा, आस्तीन के साँप थे,
घर के भीतर पलने वाले, कुछ से रिश्ते खास थे ।
माली को दोष दें कैसा, उस पर भी तो बंदिश थी,
घर वाले ही उनके रक्षक थे, जो ज़हरीले नाग थे ।

हमने जिसको अपना समझा, गलती बिसरा जाते हैं,
रिश्तों का रिश्ता रह जाये, हम ही थोड़ा झुक जाते हैं ।
वो महत्व रिश्तों का समझें, कोशिश अपनी यही रही,
बिना किसी गलती के भी, हम ही थोड़ा नम जाते हैं ।

हमने जिसको अपना समझा, अक्सर धोखेबाज़ मिले,
दुश्मन को जब गले लगाया, निज पीठ पर घात मिले ।
नादान थे हम सारे जग को, मानवता की बात बताते,
दानव को नैतिकता की बातें, दानव से प्रतिघात मिले ।

मन का मृग

– श्री. राजेन्द्र परदेसी,
लखनऊ, उ.प्र.

मन का मृग
जब
भटकने लगता है
भौतिकता के रेगिस्तान में
तब
चेहरे की बेचैनी
दिखती है साफ
आँखों का सच
और बंधन
सामने लगते हैं
तीखी चुभन के साथ ।
रिश्तो की गरमाहट
ठंडी पड़ जाती है
तभी
इच्छाओं को मारकर
कैक्टस–जैसा जीवन
जीने का आदी हो गया हूँ ।

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான்

சபரி பேலஸ், 193, 2வது அக்ரஹாரம், சேலம்-1.

88704-55599 & 0427-4265414, 0427-4552100

Website : https://shabari.in

வாணி விகாஸ் – ஓர் பார்வை .....

உங்களின் கேள்விகளுக்கு இதோ எங்கள் பதில்கள் .....

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்குரிய விண்ணப்பப் படிவங்கள் சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானின் உறுப்பினர்களுக்கு மட்டுமே வழங்கப்படும். வருடாந்திர உறுப்பினர் கட்டணம் ரூ.100/-

வாணி விகாஸ் தேர்வு எதற்காக நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் என்பதின் பொருளிலேயே இந்த வினாவிற்கான விடை இருக்கிறது. ஹிந்தி பேசத் தெரியாதவர்களை ஹிந்தியில் பேசவைப்பதே வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நோக்கமாகும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானால் நடத்தப்படுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு வாய்மொழித்தேர்வா அல்லது எழுத்துத்தேர்வா ?

பேச்சாற்றலை வளர்ப்பதே வாணி விகாஸின் கொள்கையாகும், எழுதுகின்ற வேலை இதில் கிடையாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான குறைந்தபட்ச வயது என்ன ?

எட்டு (8) வயது பூர்த்தியடைந்த அனைவரும் வாணி விகாஸ் தேர்வில் பங்கேற்கலாம். வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நிலை தேர்வில் பங்கேற்பவர்கள் விண்ணப்பத்துடன் தங்கள் பிறப்பு சான்றிதழ் நகலினை கட்டாயம் இணைக்க வேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான அடிப்படை கல்வித் தகுதி என்ன ?

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கென அடிப்படைக் கல்வித் தகுதி ஏதும் தேவை இல்லை.

வாணி விகாஸ் தேர்வு எந்தெந்த மாதங்களில் நடைபெறுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு ஜனவரி, ஏப்ரல், ஜூலை மற்றும் அக்டோபர் மாதங்களில் நடைபெறுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள் எத்தனை நிலைகளைக் கொண்டது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வானது எட்டு நிலைகள் கொண்டது.

வாணி விகாஸ் தேர்விற்கு தனியான பாடப்புத்தகம் உள்ளதா ?

வாணி விகாஸ் எட்டு நிலைகளுக்கும் தனித்தனியே பாட புத்தகங்கள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியுமா ?

ஆம். வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியும். ஒரே சமயத்தில் இரண்டு நிலைகளுக்கு விண்ணப்பிக்க இயலாது. நேரடியாக இரண்டாவது அல்லது அதற்கு அடுத்த நிலைக்கோ விண்ணப்பிக்க இயலாது. இரண்டாவது நிலையிலிருந்து எட்டாவது நிலை வரை விண்ணப்பிப்பவர்கள் தாங்கள் தேர்ச்சி பெற்ற முந்தைய நிலையின் 10 இலக்க தேர்வு எண்ணை (10 Digit Exam Register Number) தேர்வு விண்ணப்பத்தில் தெளிவாக எழுதி அனுப்பவேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மையங்கள் எங்கெங்கு உள்ளன என்று தெரிந்து கொள்ளலாமா ?

வாணி விகாஸ் தேர்வில் குறைந்தது 30 மாணவர்கள் இருந்தால் உங்கள் இடத்திலேயே தேர்வு மையம் அமைக்கப்படும். அதற்கும் குறைவாக 10 முதல் 29 வரை உள்ள நிலையில் தேர்வுமையக் கட்டணமாக ரூ.500 செலுத்த வேண்டும். **அவ்வாறான நிலையில் மற்றவர்களிடம் பயிலும் ஒரு சில மாணவர்கள் எவ்வித முன்னறிவிப்பின்றி தங்கள் தேர்வு மையத்தில் பங்கேற்பார்கள்.** தேர்வுமையக் கட்டணத்தை எக்காரணத்தைக் கொண்டும் திருப்பித் தர இயலாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் சான்றிதழ் உள்ளதா ?

ஆம், உள்ளது. வாணி விகாஸ் தேர்வு முடிந்து 30 நாட்களுக்குள் தேர்வு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் 60 நாட்களுக்குள் சான்றிதழ் அனுப்பி வைக்கப்படும். தேர்வு முடிவுகள் https://shabari.in-ல் வெளியிடப்படும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படும் ?

சபரியால் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட அனுபவமிக்க ஆசிரியர்களால் தேர்வு நடத்தப்படும்.

இத்தேர்வுக்கான மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளதா ?

பாட புத்தகத்தின் கடைசிப்பக்கத்தில் மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மாணவர்களுக்கு பயனுள்ளதா ?

ஹிந்தியின் இமாலய வளர்ச்சி மற்றும் பயனுள்ள பயிற்சியில் மாணவர்கள் நிச்சயம் பலன் பெறுவர்.

புத்தகக் கட்டண விவரம் :

புத்தகத்தின் பெயர்	தொகை
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00
வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00

புத்தகக் கட்டணம் செலுத்துவது எப்படி ?

புத்தகக் கட்டணத்தை https://shabari.in என்கிற எங்களது இணையதளத்தின் வாயிலாக மட்டுமே செலுத்தவும்.

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

पुगळसोळ नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

चोलवंश का ये राजा जन्म लिए थे राजा का पुत्र बन
राजा जब ये बन पाए करने लगे सेवा अनगिन अनुदिन
मंदिर एक नहीं अनेकानेक बनवाये सब में पूजा करवाए
शिव भक्त महान बनकर ये शिव की कीर्ति गुण नित गाए
तिरुच्चि के उरैयूर से करने लगे थे शासन शिव का शासन
बदल लिए तब राजधानी पुगलचोल उरैयूर से गए थे करूर
दोनों जगह शिव मंदिर बने भक्त बन ये अति सुंदर
शिव की पूजा वही रहा सबसे सुखदायक सुंदर ।

शिव की पूजा करते थे अनुदिन एरिबत्त नायनार समन
हर रोज जुटाकर लाते थे शिव पर चढ़ाने हर कहीं से ये सुमन
एक बार आ गया सामने राजा का हाथी बन अविवेक
फूल सब बिखरा दिया जान अनजान में हाथी राजा के तब
मार गिरा दिए थे हाथी को क्रोधित होकर एरिबत्त नायनार
मार गिरा दिए थे हाथी के पालक महावत उसको भी
खबर पाकर आए सामने पुगलचोल नायनार उनके
तलवार अपना सामने रखकर काटने को कहा गला ।

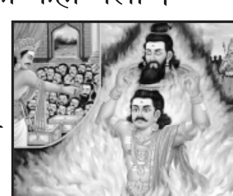

शिव भक्त की शिव भक्ति देकर नाराज छोड़ गए
शिव भक्त को शांत पाकर तृप्त हुए पुगलचोल नायनार
कर रहे थे हमेशा की तरह शिव मंदिरों की अतुल सेवा
कर रहे थे दर्शन महादेव के हर रोज शिव मंदिर जाकर
मंदिर की सेवा सहित कर रहे थे शिव भक्तों की भी सेवा
शिव का नाम अपना कर कर रहे थे वे राज्य की सेवा
मंदिर की सेवा सहित कर रहे थे शिव भक्तों की भी सेवा
शिव का नाम अपना कर कर रहे थे वे राज्य की सेवा ।

राजा नहीं महाराज ठहरे
राजा सब भरते नियम से कर
एक था राजा छोटा प्रांत का नाम था उसका अदियन
कर देने से इनकार कर दिया पहचान लिए मंत्री गण
महाराज की अनुमति पाकर बढ़ने लगी थी तब बड़ी सेना
युद्ध शुरू हो गई थी बढ़ने लगी थी महाराज की सेना
सबक सिखाने गए थे उस राजा को मार गिराए अनेक को
वीरता पूर्वक युद्ध हुई सामने की सेना गिड़गिड़ाने लगी
जीत जब आती है तब बहुत कुछ साथ लाती है ।

नायनार के चरणों में नमन करते हुए वापस पहुँची सेना
साथ लाई थी सोना चाँदी जवाहरतों की अनगिनत खजाना
सूझा था तब किसी को नवरत्न ही नहीं ले जाना है
धन के साथ गिराए गए वैरी के सिरों भी साथ ले जाना है
वीरता का यह प्रतीक ठहरा युद्ध के उन सेनानियों को
बात किसी को पता ही नहीं था विधि की उस विडंबना की
वीरता का यह प्रतीक ठहरा युद्ध के उन सेनानियों को
बात किसी को पता ही नहीं था विधि की उस विडंबना की ।

कटे हुए उन सिरों के बीच में दिख गया एक ऐसा सिर
जटामुटि सहित भस्म लगा रखा था एक कटा हुआ सिर
शिव भक्त की हत्या उसे सह नहीं पाए नायनार
बेटे को राज्य सौंप कर चुन लिए तब वे आत्म बलिदान
सोने की थाली में कटा हुआ सिर उसे रख कर ले लिए सम्मान सहित
आग जलाकर यज्ञ की चढ़ गए सिर सहित उस वेदी पर
शिव का नाम जपते जपते जलने लगे तब पुगलचोल नायनार
शिव पद पाकर शिव में मिल गए पुगलचोल नायनार ।

अभिषेक करते अनुदिन, पानी से पुगल नित ।
सोने का सिक्का पाए, शिव से हर दिन एक ।।

गज़ल

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज,
लखनऊ, उ.प्र.

जिन्दगी के सफ़र में हज़ारों लोग मिला करते,
कोई भुला दिया जाता कोई बेहद याद आता है ।
कोई अपना दिखता है लेकिन अंदर से बेगाना,
मगर उसका हुनर देखो अपनापन दिखाता है ।
बिना बोले सुनने की आदत पड़ गई जब से,
जितना चुपचाप सुनता हूँ उतना वो सुनाता है ।
सूरज की सफलता पर अँधेरा इस कद्र जलता,
जुगनुओं को साथ लेकर सूरज को चिढ़ाता है ।
दर्द ने कहा आँसू से क्यों निकलता आँखों से,
बेदर्दी दुनिया के आगे व्यर्थ खुद को बहाता है ।
कहाँ रह गए रिश्ते अब हँसने और हँसाने के,
खुशियों के मौंकों पर हर रिश्ता रुलाता है ।
तब धरती की प्यास को बादल समझता था ।
अब प्यास की बेचैनी पर मंद-मंद मुस्काता है ।

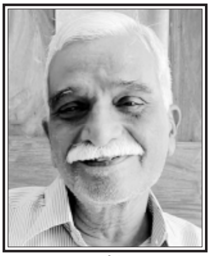

लघु रचनाएँ

– श्री. पुष्करराय जोषी, राजकोट, गुजरात

फूलदान में
फूल सजाकर
मानवी क्यों बिखेर रहा है
अपने आसपास कंटक?

*****

कुदरत ने
मनुष्य, पशु-पक्षी और जंतुओं कों
कितने विभिन्न रंग बांटे हैं,
किंतु
सबके प्राणदाता लहू का रंग
लाल ही क्यों रखा है?

*****

मानवी ने जंगल को काट कर
खेत बनायें,
फिर खेत को उजाड़ कर
बहुमंजिला इमारतें रचाई,
अब उस भूल-भुलैया में
प्रेत की भांति भटक रहा है
दुःख से छूटकारा पाने के लिए ।

कुंडलियाँ छंद रचना

– श्री. विमल कुमार,
पूर्णियाँ, बिहार

– 01 –

चंदा चोरी जो किया, देख लिए हैं राम ।
मिले सजा अवधेश से, कर दें काम तमाम ।।
कर दें काम तमाम, क्षम्य यह अपराध नहीं ।
करें उसे बेनाम, नहीं आस्था बोध सही ।।
यह है जघन्य पाप, सजा हो फाँसी फंदा ।
लगे सभी को शाप, करे जो चोरी चंदा ।।

– 02 –

राम बसे मन में रहें, भक्त किए धन दान ।
चुरा चोर धन संपदा, देश गँवाया शान ।।
देश गँवाया शान, रक्त दूषित रग दौड़े ।
मिटा विश्व गुरु मान, ओह भगवान न छोड़ें ।।
'विमल' भक्ति की ओट, लगी रट तेरी धन में ।
माया का यह मोह, कहे राम बसे मन में ।।

यादों की अमराई

– डॉ. अलका अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

संभव है तुम्हें अनुभव हो
तनहाइयाँ यहाँ ।
लेकिन सुखद स्मृतियों की
शहनाई साथ है ।

लगता हो तुम्हें चुप्पी ही
है दूर तक यहाँ ।
मेरी मधुर स्मृतियों की
परछाई साथ है ।

संभव है सबको ही यहाँ
जंगल दिखाई दे ।
लेकिन यहाँ अतीत की
अमराई साथ है ।

तुमको नहीं अच्छा लगे
घुटता हो दम यहाँ ।
लेकिन यहाँ मेरे लिए
पुरवाई साथ है ।

गीत !

देश हमारा

– श्री. अशोक आनन, शाजापुर, म.प्र.

शीशा नहीं, जो चटक जाये–
ज़रा–सी एक चोट से ।
अटूट है यह देश हमारा ।

सभी जाति, भाषा, प्रांत, मज़हब के–
इसमें रहते लोग यहाँ ।
खान–पान, बोली, पहनावा अलग के–
इसमें बसते लोग यहाँ ।

बालू नहीं, जो बिखर जाये–
हवा के इक झोंके से ।
अटूट है यह देश हमारा ।

नदियाँ, पर्वत, वृक्ष, जीव की–
हम पूजा करते आये ।
नृत्य, गान, संगीत पर्व की–
साधना साधते आये ।

ऋषि–मन नहीं जो भटक जाये–
मेनका के इक नाच से ।
अटूट है यह देश हमारा ।

कई सिकन्दर आये, आकर चले गये–
मंसूबे हुए न पूरे ।
फ़तेह करने की इसे जिसने भी सोची–
उसके ख़्वाब रहे अधूरे ।

नाला नहीं जो झट बहक जाये–
काग़ज़ की इक नाव से ।
सागर है यह देश हमारा ।

हवा के झोंकों से पहाड़ नहीं दरकते–
अडिग सदा वे रहते ।
लहरों के आने से द्वीप नहीं सरकते–
बसे सदा वे रहते ।

आँसू नहीं जो ढलक जाये –
पानी बनकर आँखों से ।
मोती है यह देश हमारा ।

मेरा उपहार

– डॉ. हीरेन्द्रकुमार भागवती, गुवाहाटी, असम

मैंने तुम्हें
एक मुट्ठी उजाला सौंपा है–
मानो बुलबुल के गीत से
प्रज्वलित कोई दीप ।
उस उजाले से
जीवन के समस्त अँधेरे
विदा कर देना ।
यदि कभी
मेरे हिस्से की रोशनी
समाप्त भी हो जाए,
तो भी मुझे कोई विषाद नहीं ।
बस इतना हो–
तुम्हारा जीवन
बुराँश के फूलों–सी
रक्तिम आभा से
सदा खिलता रहे ।

यत्र तत्र सर्वत्र

– डॉ. अशोक,
पटना, बिहार

यत्र तत्र,
जीवन की धुन,
प्रकृति गाए ।
शीतल पवन,
पत्तों की भाषा,
मन मुस्काए ।
नीला गगन,
उड़ते पंछी,
स्वप्न सजाएँ ।
ओस की बूँद,
सूरज की किरण,
मोती बन जाए ।
नदी का जल,
कल–कल गान,
हृदय बहाए ।
यत्र तत्र,
प्रेम की सुगंध,
जग महकाए ।
यत्र तत्र,
सत्य की ज्योति,
पथ दिखलाए ।
सर्वत्र बस,
मानवता खिले,
विश्व मुस्काए ।

मोर

(विधा – पद्य बालकविता)

– श्री. श्यामसुंदर तिवाड़ी 'मधुप',
भीलवाड़ा, राजस्थान

मोर हमें लगता है प्यारा,
बड़ी सुहानी बोली ।
पावस इसको खूब सुहाती,
खुश बच्चों की टोली ।।
मौसम लगे सुहाना इसको,
सबको नाच दिखाता ।
पैर देखता जब भी अपने,
खुद को रोना आता ।।
पंख बड़े हैं नीले इसके,
लंबी इसकी गर्दन ।
साँपों का लगता है दुश्मन,
कर देता है मर्दन ।।
बागों में लगते जब झूले,
मन हर्षित हो जाता ।
नाच देखने आते हर जन,
जुड़ता उनसे नाता ।।
चिड़ियाघर में भी मिल जाता,
सबको खूब लुभाता ।
देख–देख कर सैलानी का,
अंतर्मन खिल जाता ।।

प्यारा तिरंगा

– श्री. भूपसिंह
'भारती',
नारनौल, हरियाणा

फहर फहर फहराये रे,
अपना प्यारा तिरंगा ।
गगन बीच लहराये रे,
अपना प्यारा तिरंगा ।।
तीन रंगों से सजा तिरंगा,
भारत की है ध्वजा तिरंगा,
जन–जन के मन को भाये रे,
अपना प्यारा तिरंगा ।।
सबसे ऊपर केसरिया रंग है,
इसे देख उठे रण में डंग है,
वीरता के रंग में रंगाये रे,
अपना प्यारा तिरंगा ।।
ध्वजा बीच में सफेद रंग है,
जो शांति की बहती गंगा है,
जन–जन के मन में शांति लाये रे,
अपना प्यारा तिरंगा ।।
सबसे नीचे हरा रंग है,
खुशहाली का सार भरा है,
रिपु देख–देख थर्राये रे,
अपना प्यारा तिरंगा ।।
ध्वजा तिरंगा भारत का दर्पण,
तन–मन–धन सब इस पर अर्पण,
भारती तिरंगे की महिमा गाये रे,
अपना प्यारा तिरंगा ।।

हिन्दी का छूट रहा साथ

– श्री. अजय नायर, कोच्चि, केरला

हिन्दी का छूट रहा है अब साथ
अंग्रेजी सभ्यता देश में आने से ।
जाने क्यों भूल रहे हम सभी यह
शुभ प्रभात, राम राम बोलने से ।।

हाय हेलो छा गया हर जुबान पर
भूल गए हम भी हैं, हिन्दुस्तानी से ।
खिचड़ी बना रखी हमने हिन्दी की
अंग्रेजी भाषा की प्राथमिकता देने से ।।

सुबह उठते ही, गुडमॉर्निंग का ज़ोर
साँस भी लेते हैं हम तो अंग्रेजी से
कैसे होगा हिन्दी भाषा हर जुबान पर
हम सभी खा–पी रहे अब अंग्रेजी से

माता पिता कहना भूल चुके हम
जुड़ गए मॉम और डेड के बंधन से
अंग्रेजी स्कूलों में पड़ना बना फैशन
जाने क्यों जूझ रहे हैं हम हिन्दी से

पल पल शब्द अंग्रेजी के उमड़ रहे
दीमक बन कर, हिन्दी के शब्दों में ।
जाने क्यों कुछ लोगों को अब यहाँ
शर्म आ रही है हिन्दी बोलने समझने में ।।

हर दिन एक कविता

– एडवोकेट
डी.के.कनौजिया,
दिल्ली

हर दिन बस कुछ पल ठहरो,
मन की धूल ज़रा–सी झाड़ो ।
शब्दों की निर्मल सरिता में,
अपने अंतर्मन को उतारो ।
जब जीवन का शोर बढ़े,
जब मन में चिंता घर कर जाए ।
एक कविता धीमे–धीमे,
आशा का दीपक बन जाए ।
कविता केवल छंद नहीं है,
यह मन की सच्ची भाषा है ।
टूटे सपनों को जोड़ सके,
यह जीवन की परिभाषा है ।
हर पंक्ति में विश्वास खिले,
हर शब्द नया साहस भर दे ।
अंधियारे मन के आँगन में,
सूरज जैसी किरणें कर दे ।
जो कह न पाए आँखों से,
वह कविता सहज कह जाती है ।
भीतर छिपे हर दर्द को,
ममता से सहला जाती है ।
क्रोध, निराशा, भय और पीड़ा,
सबका बोझ हल्का करती ।
मुस्कानों के छोटे–छोटे
फूल हृदय में फिर से धरती ।
रोज़ पाँच मिनट का यह संकल्प,
जीवन को उत्सव कर देगा ।
तनावों के भारी बादल,
धीरे–धीरे दूर कर देगा ।

आत्मविश्वास

– श्री. वर्षा
वार्ष्णेय,
अलीगढ़, उ.प्र.

थकते नहीं कभी
जो अकेले चलते हैं
दुनिया में कहाँ
सच्चे साथी मिलते हैं
हिम्मत ही तुम्हारा
आजीवन साथी है
आत्मविश्वास से
जिंदगी मुस्कराती है
धूप छाँव का खेल
हमें यही सिखाता है
पाना और खोना ही
राह नयी बनाता है
शाश्वत सत्य को समझ
पथ पर तुम चलते जाना
साधना का दौर कठिन है
पर असम्भव तो नहीं
मत समझो कमजोर खुद को
जो ठुकरा रहे हैं आज
तुम्हें अकेला समझ
कल वही हाथ मिलाएँगे
दुनिया का दस्तूर है
वो जरूर निभाएँगे

महँगाई पर मौन क्यों ?

– श्री. हरे कृष्ण प्रकाश,
पूर्णियां, बिहार

मंदिर–मस्जिदों की खातिर,
जो खुद खूब शोर मचाती है,
नेताओं की रैली में जुटकर,
नारा खूब लगाती है।
अच्छे दिन का सपना देखकर,
अपना वोट लुटाती है,
फिर बढ़ती महँगाई पर,
जनता क्यों मौन रह जाती है ?

सौ पार हुआ पेट्रोल जहाँ,
डीजल की आग झुलसाती है,
जो था कभी सस्ता सिलेंडर,
अब उसकी कीमत रुलाती है ।
महँगे राशन की कड़वी मार से,
थाली भी खाली रह जाती है !
फिर बढ़ती महँगाई पर,
जनता क्यों मौन रह जाती है ?

झूठे वादों के बहकावे में,
जो अपनी ही किस्मत खोती है,
थाली खाली होने पर भी,
जो जय–जयकार में सोती है ।
पूछ रहे 'हरे कृष्ण' अब,
यह चेतना कब जागेगी ?
फिर बढ़ती महँगाई पर,
जनता अपनी चुप्पी तोड़ेगी ।

बरखा रानी !

– श्री. मानसींग
पारगी 'मान',
दाहोद, गुजरात

ऋतुओं की बरखा रानी,
धरती पर लाओ पानी ।।
चाहे बंगाल की खाडी,
या अरब सागर के रास्ते ।
कारी बदरियों को लेकर,
आओ ! सभी के वास्ते ।।
जो देख–देखकर आया,
कृषक की आँख में पानी ।।
ऋतुओं की...
अरी ! धान उगाने की,
आशा में की है बुवाई ।।
यह जून गया जुलाई ।
फिर भी तू न आई ।।
अब नीलगगन से उतरो,
रिमझिम लाओ पानी ।।
ऋतुओं की...

अक्षर की महिमा

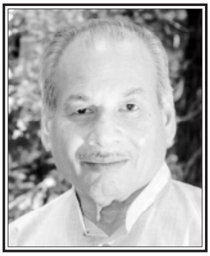

– विद्यावाचस्पति
डॉ. कर्नल आदि
शंकर मिश्र
'आदित्य',
लखनऊ, उ.प्र.

अक्षर से शब्द बनते,
शब्दों से वाक्य ।
वाक्य जुड़कर बनते,
ज्ञान के आलोक ।।

'क' से 'कमल', 'ख' से 'खुशबू',
'ग' से 'गंगा' पावन धारा ।
अक्षर मिलकर शब्द रचते,
शब्दों से रिश्तों का बसेरा ।।

वाक्य बनें तो भाव समझ आए,
अनुच्छेद से पूरी बात बन जाए ।
कहानी में जीवन ज्योति झलके,
कविता में दिल का गीत समाए ।।

लेख लिखें तो सोच निखरे,
विचारों को नई उड़ान मिले ।
अक्षर ही नींव है जिस पर,
सारा साहित्य जहान टिके ।।

बच्चा पहले अक्षर सीखे,
फिर पढ़कर दुनिया जाने ।
अक्षर ही गुरु, अक्षर ही शिष्य,
अक्षर से सबकी पहचान बने ।।

पर सुनो, सबसे बड़ा रहस्य क्या है,
इस सारे ब्रह्मांड का आधार क्या है,
वेद कहते हैं, ऋषि गाते हैं,
'ॐ' ही तो प्रणवाक्षर है ।

'ॐ' से सृष्टि उपजी,
'ॐ' में लय हो जाए ।
अक्षर का अक्षर, शब्दों का शब्द,
'ॐ' में ब्रह्माण्ड समा जाए ।।

जो अक्षर को समझ गया,
उसने ज्ञान का सार पा लिया ।
आदित्य जो 'ॐ' को जप ले,
उसने ब्रह्म को ही पा लिया ।।

।। अक्षरम् ब्रह्म, प्रणवम् ब्रह्म ।।

दूर-दूर की सोचनेवाले हे मानव तू कान खोलकर सुन
अपने आसपास में रहनेवाले जीवो के दुख तो सुन
जीने आए हो सिर्फ अपने बारे में सदा सोचा मत कर
जीने का हक हर एक का है यह बात तू अब मन में भर ।।

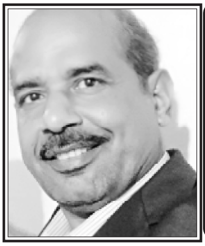

रूप पशुपतिनाथ के

– श्री. कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी
'राम', इन्दौर, म.प्र.

पशुपतिनाथ के दर्शन करके,
मन मंद-मंद मुस्काया है,
हर छवि देखी है भोले की,
और जीवन हरषाया है ।
पशुपतिनाथ के...
भोले की महिमा के सारे,
रूप निखरते देखे हैं,
भाव समेटे कितने सारे,
पल-पल लगें अनूठे हैं ।
पशुपतिनाथ के...
मिट्टी के कण-कण में भोले,
छवि तेरी ही दिखती है,
सरगम की हर धुन पर देखो,
राग भोले की फबती है ।
पशुपतिनाथ के...
पग-पग नीर बहे धरती पर,
पेड़ों की बढ़ती है काया,
शिखर, घाटियाँ इतनी ऊँची,
सृजित हुई भोले की माया ।
पशुपतिनाथ के...
ढूँढ रहे बदली में सूरज,
छुपे हुए ज्यूँ भेद हो सारे,
भोले-भोले कहती नगरी,
आसमान में जितने तारे ।
पशुपतिनाथ के...
मन का मयूरा नाच रहा है,
भोले तेरे दर्शन करके,
भक्ति-भाव की भर रही गठरी,
भोले-भोले कहते-कहते ।
पशुपतिनाथ के...

दर्पण

– श्री. गौरीशंकर
वैश्य विनम्र,
लखनऊ, उ.प्र.

हम बस दर्पण देख रहे हैं ।
छद्म समर्पण देख रहे हैं ।
आग छिपी पत्थर में होती,
केवल घर्षण देख रहे हैं ।
तन में नहीं, समस्या मन में,
रूपाकर्षण देख रहे हैं ।
जीवित से कुछ मोह नहीं था,
अन्तिम तर्पण देख रहे हैं ।
सम आवेशी बीच बलों में,
घोर विकर्षण देख रहे हैं ।
हिमनद, बूँद, बर्फ बन जाता,
घन-जल-वर्षण देख रहे हैं ।

ऐसा हो हमारा जीवन

– श्री. तरुण कुमार दाधीच,
उदयपुर, राजस्थान

ऊँच-नीच, भेद-भाव सदैव
देते रहते दंश
जड़ मूल से मिटते ही रहें
भेदभाव के अंश
आपस में हम आ जाते हैं
जो सुख-दुख में काम
ऐसे मानव ही करते हैं
मानवता का नाम
पथ आलोकित रहे हमारे
और सफल हों काज
कदम से कदम मिलाकर चलें
लो लक्ष्य साधें आज
संघर्षों का हम करें सामना
संकटों से खेल
ऐसे लोगों का हो पाता है
सफलताओं से मेल
इस धरा पर कोई क्यों रहे
दीन और लाचार
शांतिपूर्ण जीवन देता है
जीवन में रस धार

उम्र तो बढ़ती हैं...

– डॉ. पी.आर. वासुदेवन शेष,
चेन्नै, तमिलनाडु

बचपन से जवानी
जवानी से बुढापा
यही उम्र की कहानी है
उम्र तो सबक सिखाती है
गहरे अनुभव का ।।

उम्र बढ़ती है तो
वक्त के साये में
इनसान नहीं छुटा रहा
उम्र के बंदिशों में ।।

उम्र का बढना ही
तो परिपक्क्वता का
होना है
उम्र ही आईना है
अपने किये कर्मो का ।।

उम्र ही पथ प्रदर्शक है
अच्छाई और नेकी का
आइए उम्र का मज़ा ले
मस्ती और आनंद से जियें ।।

उम्मीद का उगे सूरज

– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर,म.प्र.

उम्मीद से सूरज उगे हैं,
उम्मीद से जीवन चले हैं,
उम्मीद से सपने जगे हैं,
उम्मीद से मंज़िल मिले हैं ।

अंतस में रख विश्वास अगर,
उम्मीद से संकट टले हैं,
सदैव होंगी जीत उन्हीं की,
मेहनत से जो लोग पले हैं ।

चिंता, फिकर तुम सब छोड़ दो,
जहाँ हार है, वही जीत है,
उगाना है हथेली पर रवि,
जीवन का अब यही गीत है ।

संशय नहीं हो मन में तनिक,
बनकर निर्भय चलता ही चल,
जीतना तुम्हें दुनिया को गर,
बेफिक्र आगे बढ़ता ही चल ।

जीवन में हो घोर निराशा,
उम्मीद का दामन थामना,
दूर होगी मन की उलझनें,
हृदय में भर यह शुभकामना ।

सबकी खुशियों में जीना है,
आस के दीए जलते रहें,
उम्मीद की लौ बुझे न कभी,
आँखों में सपन पलते रहें ।

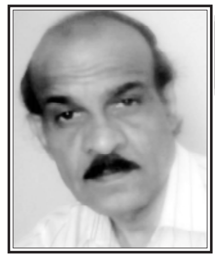

गज़ल

– श्री. नवीन माथुर पंचोली, अमझेरा, धार, म.प्र.

जीवन में इतना सीखा ।
सच को सच कहना सीखा ।

फूलों से रिश्ता जोड़ा,
काँटों से बचना सीखा ।

थी जितनी कुव्वत अपनी,
दम उतना भरना सीखा ।

छोड़ बदी के बहकावे,
नेकी पर चलना सीखा ।

मन ने जो अहसास दिया,
तन ने वो सहना सीखा ।

भूली–बिसरी बातों को,
यादों में रखना सीखा ।

दूरी, मंज़िल, राहों पर,
सूरज से तपना सीखा ।

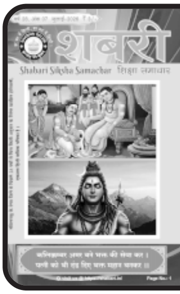

पाठकों के पत्र ...

प्रिय श्रीधर सेलम जी, शबरी शिक्षा समाचार का जुलाई 2026 का अंक पाकर अति प्रसन्नता हुई । मेरी रचना को और मेरे पत्र को प्रकाशित करने के लिये आपका आभार, हार्दिक धन्यवाद । दक्षिण भारत से शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका के माध्यम से हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार करने के लिए आप निरंतर प्रयासरत हैं, इसके लिए आपका हार्दिक स्वागत है और बधाई भी स्वीकार करें । पत्रिका के निरंतर लोकप्रिय अभियान के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं ।

– विद्यावाचस्पति डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

'शबरी शिक्षा समाचार' पत्रिका जिसके प्रकाशक आदरणीय एम. श्रीधर जी हैं, जो निरंतर इसे निकाल रहे हैं । पत्रिका की निरंतरता बहुत बड़ी बात है । चूँकि लघु पत्रिकाओं को निकालना जोखिम भरा काम माना जाता है । प्रकाशक और संपादक मंडल फिर भी इसे अच्छे से निकाल रहे हैं । इससे यह पता चलता है कि यह पत्रिका उनकी निष्ठा से जुड़ चुकी है ।

पत्रिका पठनीय है । रचनाओं का चयन संतोषजनक है । 'शबरी शिक्षा समाचार' पत्रिका के इस अंक के लिए आपको बधाई सर ।

– श्री. लखनलाल पाल, जालौन, उ.प्र.

कोई कार्य शुरू करना तो सरल है, परंतु उसे ही नियमित कर किसी लक्ष्य तक पहुँचाना सरल नहीं होता । उसके लिए निष्ठा और लगन के साथ पुरा करने के लिए साधना की जरूरत होती है । दक्षिण में हिन्दी का पताका लेकर आप जो चल रहे है, उसके लिए आपको बहुत-बहुत बधाई ।

– श्री. राजेन्द्र परदेसी, लखनऊ, उ.प्र.

अदभुत । अकल्पनीय और अलौकिक भाव । श्रेष्ठतम प्रस्तुति ।

आपका यह प्रयास मानवीय संवेदनाओं की जीवंत पाठशाला के रूप में युगों युगों तक जाना जाएगा । शुभ संस्कारों के बीजारोपण के नित नवीनतम प्रयास आपकी पहचान बने । प्रभु आपको असीम ऊर्जा देकर इस महान सद्कर्म के लिए सदैव प्रेरणा देते हैं । जय हिन्दी । जय हिन्दी । जय संस्कार । जीवन में बाँटे खुशियाँ अपार ।

– डॉ. दीपक गोस्वामी, मथुरा, उ.प्र.

नाममात्र मूल्य पर वितरित 'शबरी' पत्रिका के नियमित निष्ठावान प्रकाशन के लिए श्रीधर जी का विशेष अभिनंदन ।

– डॉ. वी. वेंकटेश्वर राव, हैदराबाद, तेलंगाना

एक नए संपूर्ण पठनीय सामग्रियों से भरपूर अंक के लिए हार्दिक बधाई ।

– श्री. शैली, लखनऊ, उ.प्र.

आदरणीय, सादर नमस्कार । कमाल करती शबरी

घर-घर शबरी, घर-घर हिन्दी ।

शबरी ने हिन्दी को भारत में जो नया मक़ाम दिलाया है, वह किसी तपस्या से कम नहीं है । हम हिन्दी भाषी शबरी के इतने आभारी हैं कि इसे शब्दों में बयां नहीं कर सकते । रचनाएँ पठनीय एवं उत्कृष्ट होती हैं । इसमें कोई संशय नहीं कि शबरी अपने जीवन के चरमोत्कर्ष की ओर अग्रसर है । बहरहाल... संपादक मंडल का अनहद आभार, धन्यवाद और आत्मीय अभिवादन । शबरी सालोंसाल अनवरत यूँ ही छपती रहे और हम इसमें छपते रहे तथा पाठक इसे पढ़ते रहे । आदर सहित...

– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर, म.प्र.

शबरी शिक्षा समाचार का जुलाई –2026 अंक प्राप्त हुआ । देश के विभिन्न प्रांतों के रचनाकारों की रचनायें पढ़ने का अवसर मिला । रचनाओं में विविधता थी । संस्कृत भाषा में भी रचनायें पढ़ने को मिली । तीसरी दक्षिण भारतीय भाषा का मुझे ज्ञान नहीं है । अतः उस भाषा में पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ मैं पढ़ नहीं पाया । अहिन्दी–भाषी क्षेत्र में हिन्दी को शबरी समाचार पत्रिका के माध्यम से शब्द और वाणी प्रदान करना अत्यंत सराहनीय है । शबरी पत्रिका का नया अंक बहुत अच्छा लगा ।

– डॉ. तेजिंद्र, कैथल, हरियाणा

अत्युत्तम अंक, साधुवाद । हमें अवलोकनार्थ उपलब्ध कराने पर हृदय से बहुत–बहुत आभार ।

– श्री. शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल', पौड़ी, उत्तराखंड

आपकी हिन्दी के प्रति निष्ठा और समर्पण का आत्मिक अभिनन्दन ! शबरी के अनवरत उन्नयन की अनन्त मंगलकामनाओं सहित ।

– डॉ. देवकीनन्दन शर्मा, बुलन्दशहर, उ.प्र.

अति सुंदर पत्रिका, अति सुंदर प्रस्तुतीकरण, आपको बधाई, धन्यवाद और शुभकामनाएँ ।

– श्री. प्रदीप कुमार अग्रवाल प्रदीप्त, दिल्ली

शबरी के नवीनतम अंक के बहुत बहुत हार्दिक आभार । शबरी अपने कर्म पथ पर अग्रसर होते हुए साहित्य प्रेमियों का निरंतर मार्गदर्शन करती रहे... शुभकामनाएँ ।

– डॉ. राकेश, आजमगढ़, उ.प्र.

बढ़िया और सुंदर अंक के लिए बधाई स्वीकार करें । संपादकीय भी सामयिक और समीचीन है । बहुत–बहुत बधाई ।

– डॉ. अजय कुमार, छपरा, बिहार

हिन्दी की सेवा में अहर्निश निरत शबरी के अंक नियमित प्राप्त करना मेरे लिए आह्लादकारी है । नीरसता में रसवर्षण करती यह पत्रिका सतत सफलता सोपान पर आरुढ़ रहे यही शुभकामना है ।

– श्री. नवल किशोर सिंह, तिरुच्चि, तमिलनाडु

आद्योपान्त अंक पढकर प्रसन्नता हुई । सामग्री मन को भाने के साथ ही सुखद संदेश शिक्षा व संस्कार दे रही है, सभी को बधाई ।

– श्री. शशांक मिश्र भारती, शाहजहाँपुर, उ.प्र.

आदरणीय, श्रीधर साहब । सादर प्रणाम । बिना किसी आशा अपेक्षा से आपकी ओर से भेजी गई – 'शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका' हमें समय पर नियमित रूप से मिल रही है । इस पत्रिका में देश के कोने–कोने से लिखी गई रचनाएँ पढने को मिलती है । ऊपर से आप हमारे जैसे नवोदित साहित्यकारों की रचनाएँ भी प्रकाशित करके साहित्य जगत में हमारी पहचान करा रहे हो । यह बडे सौभाग्य की बात है । आपके इस सत्कार्य के लिए हम सदैव आभारी हैं ।

– श्री. मानसींग पारगी 'मान', दाहोद, गुजरात

आदरणीय को सादर प्रणाम ! पत्रिका के संबंध में दो पंक्तियाँ :–

नहीं पत्रिका आपकी, नहीं खास है क्षेत्र ।
जगत कल्याण हो रहा, खुला हुआ शिव नेत्र ।।

सादर प्रेषित

– श्री. विमल कुमार, पूर्णियाँ, बिहार

आदरणीय संपादक महोदय,

कुछ व्यक्ति युग की माँग होते हैं । ईश्वर उन्हें समाज के कार्यों के लिए भेजते हैं । ऐसी ही साहित्यिक समाज सेवा के लिए आपको नियुक्त किया है । आप समाज की हर गतिविधि को शबरी शिक्षा समाचार के माध्यम से लेख कविताओं और प्रवचन के द्वारा समाज को आइना दिखाने में अपने आपको समर्पित किए हुए है । आपका कोटि–कोटि वंदन ।

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज, लखनऊ, उ.प्र.

नवांकुर

धैर्य

– लक्षिता श्रीधर,
सोना कॉलेज,
सेलम, तमिलनाडु

आजकल की तेज़ ज़िंदगी में हम हर काम का नतीजा तुरंत चाहते हैं । लेकिन धैर्य का मतलब सिर्फ रुककर इंतज़ार करना नहीं है, बल्कि इंतज़ार करते समय अपने मन को शांत और खुश रखना है । जब हम अपनी ज़िंदगी की भागदौड़ को थोड़ा कम करते हैं, तो धैर्य ही हमें संभालता है । इसके बिना मन को शांति मिलना नामुमकिन है । जैसे एक छोटे से बीज को बड़ा पेड़ बनने में समय लगता है, वैसे ही ज़िंदगी में अच्छी चीज़ों को मिलने में भी थोड़ा वक़्त लगता है । सही समय का इंतज़ार करना ही असली समझदारी है ।

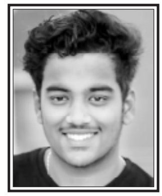

पिता की खामोश ताकत

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज,
कोवै, तमिलनाडु

मेरे पिता ज़्यादा बोलते नहीं,
पर उनके कर्म बहुत कुछ कहते हैं,
उन्होंने अपनी थकान छुपा ली,
ताकि मेरी मुस्कान बनी रहे,
उन्होंने अपने सपने पीछे छोड़ दिए,
ताकि मैं अपने सपने जी सकूँ,
जब मैं गिरा,
उन्होंने मुझे उठना सिखाया,
जब मैं हार गया,
उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी,
आज समझ आता है,
उनका प्यार शब्दों में नहीं था,
बल्कि हर उस त्याग में था,
जो उन्होंने मेरे लिए किया।
अगर मैं कभी कुछ बन पाया,
उसमें सबसे बड़ा हिस्सा उनका होगा,

SHABARI BOOK HOUSE
Shabari Palace, 194, 2nd Agraharam, Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414, Ph : 94433-65414, 98427-65414
SHABARI SHABDHA SAAGAR
HINDI - HINDI - ENGLISH - TAMIL (Trilingual Dictionary)
1632 Pages | 51,000 Words
Visit us at https://books.shabari.org

नई शुरुआत

– शंकर वेंकटेश्वरन,
एलायंस यूनिवर्सिटी,
बंगलुरु, कर्नाटक

मैंने बेंगलुरु के एलायंस यूनिवर्सिटी में प्रवेश लेकर अपनी जिंदगी की एक नई शुरुआत की। यहाँ हर एक चीज़ सीखने का तरीका तमिलनाडु के तरीकों से बहुत अलग लगता है। यहाँ पाठ्यक्रम के द्वारा पढ़ाने से पहले, वे हमसे किसी एक चीज़ पर काम करवाते हैं।

पिछले कई सालों से आज तक हमारे पर्यावरण और समाज में कई संकट और समस्याएँ होती रहती हैं। उसमें सबसे बडा हिस्सा उनका होगा। उन्हें हल करने के लिए हम सबसे काम करवाते हैं। वे सबको, दस लोगों की एक टीम बना देंगे। इस प्रोसेस से मैं ज़्यादा नए लोगों से जुड़ पाया और उनसे कॉन्टैक्ट कर पाया।

इन सब में, हमारी समस्या कारखाने में काम करनेवाले मज़दूरों की वेतन के बारे में है। हमें लोगों से मिलकर सर्वे करने और फ़ील्ड वर्क के द्वारा उनकी समस्याओं को रिकॉर्ड करने का काम था। वैसे ही हम सबने एक साथ कई काम किए। उन लोगों की सारी समस्या सुनकर एक ऐप डेवेलप करके प्रोजेक्ट सबमिट किया था। सब कुछ करने के बाद भी हम जीत नहीं पाए, लेकिन मैंने बहुत-सी चीजें सीखीं। जब मैं यहाँ नया था, तो मुझे कई ऐसी चीजों के बारे में पता नहीं था जो जो मुझसे अलग थीं।

लेकिन हर दिन नई चीजें सीखना हमें कई नए अनुभव देकर बदल देता है, और साथ ही, वे हमें यादें भी देती हैं। यह अलग-अलग तरीकों और ज़िम्मेदारियोंवाला एक नया अध्याय है। और अब, मुझे उम्मीद है कि मैं आगे बढ़ सकूँगा और उनके साथ कुछ नया बना सकूँगा।

नवांकुर– रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए। खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें। रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं।

कृपया आयु प्रमाण-पत्र की प्रति साथ भेजें।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

स्वकर्मफलमेव दुःखस्य कारणम्, न परः ।

कुरुक्षेत्रमहासंग्रामस्य समाप्त्यनन्तरं धर्मराजो युधिष्ठिरः शरशय्यायां स्थितं पितामहं भीष्मम् उपजगाम । रुधिरेण सिक्तं शरैः समाचितं स्वपितामहं दृष्ट्वा स अत्यन्तं विषण्णोऽभवत् । स स्वमेव युद्धस्य तथा सर्वेषां दुःखानां कारणमिति मन्यमानः अश्रुपूर्णनेत्रः भीष्ममुवाच–भगवन् ! भवतः एषा दुःसहा अवस्था मम अपराधस्य फलम् । राज्यप्राप्त्यर्थं मया युद्धं कृतम् । यदि मया तदा सम्यक् विचारः कृतः स्यात्, एषः महान् विनाशः नाभविष्यत् । अहमेव सर्वेषामस्य दुःखस्य कारणम् ।

धर्मराजस्य एतादृशीं शोकपूर्णां वाणीं श्रुत्वा भीष्मः तमाश्वासयन् अवदत्–वत्स ! आत्मानं दोषिणं मा मन्यस्व । अस्मिन् विषये एकां प्राचीनां कथां शृणु ।

पूर्वकाले गौतमी नाम धर्मपरायणा वृद्धा ब्राह्मणी स्वपुत्रेण सह वने वसति स्म । एकदा तस्याः पुत्रं होमार्थं काष्ठानि संग्रहीतुं गतवन्तं सर्पो दष्टवान्, स च तत्क्षणमेव मृतः । तदा एकः व्याधः सर्पं बद्ध्वा गौतमीम् अपृच्छत्–किं एनं हन्याम् ? किन्तु गौतमी अवदत्–एनं मुञ्च । अस्य वधेन मम पुत्रः न पुनर्जीविष्यति, न च मम शोकः निवर्तिष्यते ।

व्याधः सर्पस्य वधमेव न्याय्यमिति मन्यमानः तिष्ठति । तदा सर्पः स्वपक्षं निवेदयति–मया न स्वेच्छया दष्टम्; मृत्योः आज्ञया एव एतत् कृतम् । ततः मृत्युः प्रादुर्भूय अवदत्–अहं कालस्य आज्ञां केवलं पालनं करोमि । अन्ते, कालः स्वयमागतः सर्वान् उवाच–न सर्पः, न मृत्युः, नाहं बालकस्य मरणस्य कारणम् । यदि कस्यचिद्दोषोऽस्ति, स तस्य बालकस्यैव । पूर्वजन्मनि यत्कर्म तेन कृतं, तस्यैव फलमस्मिन् जन्मनि प्राप्तम् । सर्वे वयं परमेश्वरस्य नियोगे साधनमात्राणि ।

कालस्य वचनानि श्रुत्वा व्याधः सर्पं मोचयामास । कथां समाप्य भीष्मः धर्मराजमुवाच–वत्स ! एवं त्वमपि आत्मानं दोषिणं मा मन्यस्व । युद्धे निहतानां सर्वेषां मरणं तेषां स्वकर्मफलमेव । त्वं धर्मरक्षणार्थं युद्धमकरोः । अतः अतीतविषये शोकः न कर्तव्यः । धैर्यमालम्ब्य धर्ममार्गे स्थितो भव ।

भीष्मस्य अमृतोपमम् उपदेशं श्रुत्वा धर्मराजस्य शोकः शनैः शनैरपगतः । स शान्तचित्तः भूत्वा पितामहं प्रणम्य तस्य समीपे उपाविशत् ।

தமிழமுது – பழிப்பன பகரேல்

– எம். ஸ்ரீதர்,
நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

''பகுத்துண்டு பல்லுயிர் ஓம்புதல் நூலோர்
தொகுத்தவற்றுள் எல்லாந் தலை'' என்றார் நம் தெய்வப் புலவர் தமிழ் மாமணி திருவள்ளுவர். (குறள் 322)

மனிதனாய் பிறந்த மகத்துவமே என்னவென்று தெரியாத, சுயநலமே என்றும் முதலிடம் என்று நினைக்கும், பல மனிதர்கள் வாழ்கின்ற இந்தக் காலத்தில் மனிதர் எவ்வாறு வாழ வேண்டும் என தான் விரும்பியதை திருவள்ளுவர் அழகாக கூறியிருக்கிறார்... தமக்குக் கிடைத்த உணவைப் பிற உயிர்களுடன் பகிர்ந்து உண்டு, வாழும் மற்ற எல்லா உயிர்களையும் பேணிக் காப்பதே, அறநூல்கள் தொகுத்துக் கூறிய அறங்கள் அனைத்திலும் மிகச் சிறந்த தலையாய அறமாகும்.

பகிர்தல் என்பது தம்மிடம் உள்ள பொருட்களை மட்டுமல்லாது தன்னுடைய அறிவையும், ஆற்றலையும், எண்ணங்களையும், எழுச்சியையும், இன்பங்களையும், இனியவைகளையும் மற்றவர்களுக்கு அளிப்பதாகும்.

பகிர்தல் என்பது எண்ணப் பகிர்வையும் குறிக்கும். மனிதன் தான் என்ன சொல்ல நினைக்கிறானோ அதனை தமது மொழியில் தனக்குத் தெரிந்த சொற்களின் உதவியோடு வெளிப்படுத்துகிறான். எண்ணங்கள் வெளிப்படும் போது உறவுகளும், பிரிவும் ஏற்படுகிறது.

ஒரு சொல் வெல்லும் ஒரு சொல் கொல்லும் என்பது நூற்றுக்கு நூறு சரியான கூற்று. நாம் என்ன வார்த்தைகளை எங்கு எப்போது யாரிடம் பயன்படுத்துகிறோமோ அதனுடைய விளைவு உடனேயோ அல்லது காலப்போக்கிலோ கண்டிப்பாக ஏற்படுகிறது. பண்பட்ட நல்ல பயனுள்ள சொற்களை பயன்படுத்த ஔவையார் திருவள்ளுவர் உட்பட ஏராளமான கவிஞர்களும் அறிஞர்களும் நமக்கு அருளிச்சென்று இருக்கிறார்கள்.

அறமே உயிராக, அன்பே பயிராக, நலமே வளமாக, நாளும் நல்லவைகளை கற்றுத் தருகின்ற நமது பாட்டி ஔவையார் அவர்கள் யாராலும் பழிக்கப்படாத யாருடைய மனதையும் புண்படுத்தாத நல்ல வார்த்தைகளை மட்டுமே உபயோகப்படுத்துமாறு சொல்கிறார். பிறர் ஏச்சுக்கும் பேச்சுக்கும் உள்ளாகும் தரமற்ற சொற்களை பேசாதே என நம்முடைய ஔவை பாட்டி நமக்கு எடுத்து இயம்புகிறார்.

தொடரும்...

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருப்பேணு பெருந்துறை

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'
Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

மூவருமாகி இருவருமாகி
முதல்வனுமாய் நின்ற மூர்த்தி
பாவங்கள் தீர்தர நல்வினை நல்கிப்
பல்கணம் நின்று பணியச்
சாவம தாகிய மால்வரை கொண்டு
தண்மதிள் மூன்றும் எரித்த
தேவர்கள் தேவர் எம்பெருமானார்
தீதில் பெருந்துறை யாரே.

- ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தப் பெருமான் அருளிய
முதலாம் திருமுறைப் பாடல்

தவறு செய்வது மனிதர், தேவர் யாவர்க்கும் பொது. ஆனாலும் தவற்றை உணர்ந்து மனம் திருந்தி மன்னிப்பு வேண்டினால் மஹாதேவன் மகிழ்கிறான், அருள்கிறான் என்ற உண்மை வரிகளுக்கு விளக்கமாகத் திகழ்கிறது காவிரி நதியின் தென்கரையில் 64-ஆவது தேவாரப் பாடல் பெற்ற அருட்தலமாகிய திருப்பேணு பெருந்துறை. ஈரோடு மாவட்டத்தில் உள்ள பெருந்துறை வேறு. இத்திருத்தலம் தற்போது மக்கள் வழக்கில் திருப்பந்துறை என அழைக்கப்படுகிறது.

அருள் வரலாறு :

ஒரு சமயம் திருக்கயிலாயம் வந்த படைப்புக் கடவுளாம் பிரம்மதேவர் ப்ரணவ மந்திரத்தின் பொருளைச் சரியாகக் கூறாததால் அவரை ஸ்ரீ முருகப்

பெருமான் சிறையில் அடைத்தார். இருந்தாலும் பெரியவரை தண்டித்தோமே என்ற கவலை ஸ்ரீ முருகப் பெருமானை வாட்டியது. இதன் காரணமாக ஒரு காலக்கட்டத்தில் ஸ்ரீ முருகப் பெருமான் பேசா மௌனியானார்.

அதுசமயம் ஸ்ரீ முருகப் பெருமான் இத்தலம் வந்து தண்டாயுதபாணியாக ஈசனை மனமிருகி தியானித்தார். அதன் காரணமாக ஸ்ரீ மஹேஷ்வரன் மனம் மகிழ்ந்தார். ஸ்ரீ முருகனின் மனக்கவலையைப் போக்கினார். மௌனியாக இருந்த ஸ்ரீ முருகப் பெருமனும் மகிழ்வுடன் பேசினார்.

இதன் காரணமாக இத்தலத்து ஈசனுக்கு ஸ்ரீ ப்ரணவ ஈஷ்வரர் என்ற திருமாமமும் ஏற்பட்டது.

சிறப்புக்கள் :

1. செங்கற் கோயிலாக இருந்த இத் திருக்கோயிலை கரிகாலசோழன் கற்கோயிலாக மாற்றினான் என்று கல்வெட்டுச் செய்திகள் கூறுவதன் மூலம் இந்த ஆலயம் 2000 ஆண்டுகளுக்கும் பழமையானது என்பது தெளிவாகிறது.
2. இத்தலத்து ஈசன் பேறு பெருந்துறை மஹாதேவர் எனவும், இறைவி மலையரசியம்மை என்றும் கல்வெட்டுக்களில் குறிப்பிடப்பட்டுள்ளனர்.
3. இத்தலத்தில் ஸ்ரீ முருகன் குடுமியுடன் தண்டாயுதபாணியாக தியான திருக்கோலத்தில் அருட்காட்சி அருள்கின்றார்.
4. மௌனியான முருகப் பெருமான் பேசிய தலமாதலால் வாய்பேச இயலாதவர்கள், திக்குவாய் உடையவர்கள் இத்தலத்து முருகனுக்குத் தேன் அபிஷேகம் செய்து ப்ராத்தனை செய்து பேச்சாற்றல் பெற்றுவருவது அனுபவம்.

5. இந்தத் திருத்தலத்தில் பிக்ஷாடன மூர்த்தி மிகவும் சிறப்பு. ஆண்டுதோறும் சித்திரை மாதம் பரணி நக்ஷத்திரத்தன்று இவருக்கு அமுது படையல் பூஜை நடைபெறுகிறது.

6. திருக்கோயில் முன்புறம் சாக்ஷி விநாயகர், குக விநாயகர் இருவரும் ஒரே சந்நிதியில் திருக்காட்சி தருகின்றனர்.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	:	ஸ்ரீ சிவானந்தேஷ்வரர் (எ) ஸ்ரீ ப்ரணவேஷ்வரர்
இறைவி	:	ஸ்ரீ மங்கலாம்பிகை
தலமரம்	:	வன்னி
தீர்த்தம்	:	மங்கல தீர்த்தம்
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	:	ஸ்ரீ உமாதேவி, ஸ்ரீ முருகன், பிரம்மதேவர் முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தப் பெருமான் இத்தலத்து ஈசனை அற்புதப் பதிகங்களால் வழிபட்டு மகிழ்ந்துள்ளார்.

தரிசன காலம் :

காலை 08.00 மணி - பகல் 12.00 மணி வரை
மாலை 05.00 மணி - இரவு 07.00 மணி வரை

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ சிவானந்தேஷ்வரர் திருக்கோயில்,
திருப்பந்துறை,
நாச்சியார் கோயில் அஞ்சல்,
தஞ்சாவூர் மாவட்டம் - 612 602.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :

0435-2448138, 94436-50826

அமைவிடம் :

திருப்பந்துறை என தற்போது அழைக்கப்படும் திருப்பேணு

பெருந்துறை திருமுறை திருத்தலமானது கும்பகோணம் - காரைக்கால் காலையில் நாச்சியார் கோயிலையடுத்து எரவாஞ்சேரி அருகில் கும்பகோணத்திலிருந்து சுமார் 12 கி.மீ. தொலைவில் அமைந்துள்ளது.

ஸ்ரீ மங்கலாம்பிகா ஸமேத

ஸ்ரீ சிவானந்தேஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்...
இணைத்திடுங்கள்
இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
8870455599 0427-4265414, 4552100
Website : https://shabari.in

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.08.2026. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi in Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்

- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
Second Agraharam, Salem - 636 001.
Visit us at https://shabari.in/

Posted at Salem HPO 636 001. August-2026

Published on 5th August-2026

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. : TN/WR/SLM(E)/121/2024-2026
Licenced to post without prepayment. TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।

அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.

Please quote your subscription number in all correspondences.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.

To

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Shublekha

Hindi Hand Writing Book

Learn the letters | Write it properly
Let us all write | Loving the letters
Best Practice | Perfect result for the beginners.

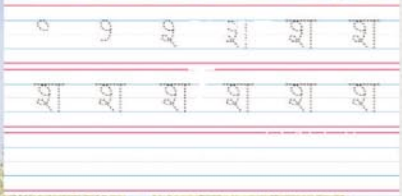

₹ 100.00

SHABARI BOOK HOUSE
"Shabari Palace", 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414, 98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/